हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 10, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 8 जुलाई, 2023 दिन शनिवार | गाजीपुर/वाराणसी

पीएम मोदी ने काशी सहित उत्तर प्रदेश को दी 12 हजार करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की सौगात

पीएम का कांग्रेस पर हमला, 2014 से पहले मात्र 19 शताब्दी ट्रेन, हमने नौ साल में 25 वंदे भारत चलाई

वाराणसी। सावन के पहले हफ्ते में शुक्रवार को वाराणसी पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनता को 12 हजार करोड़ रुपये की विकास परियाजनाओं की सौगात दी। वाजिदपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए पहले की सरकारों पर जमकर व्यंग्य वाण छोड़े। पीएम मोदी ने कहा कि पहले बैंक तक पहुंच भी सिर्फ अमीर लोगों तक ही होती थी। गरीबों के लिए तो ये माना जाता था कि पैसा ही नहीं है तो बैंक खाते का क्या करेंगे। बीते 9 वर्षों में इस सोच को भी भाजपा सरकार ने बदल दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि आज गरीब कल्याण हो या फिर इंफ्रास्ट्रक्चर, बजट की कोई कमी नहीं है। वही करदाता हैं, वही सिस्टम है। सरकार बदली है, नीयत बदली है, तो परिणाम भी बदले दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने देश पर दशकों तक राज किया, उनके शासन के मूल में भी बेइमानी रही है। जब ऐसा होता है तो चाहे कितना भी धन इकट्ठा हो तो कम ही पड़ता है। 2014 से पहले भ्रष्टाचारियों की ऐसी ही सरकारें चलती थी। बीते 9 वर्षों में हमने सिर्फ एक परिवार और एक पीढ़ी के लिए योजनाएं नहीं बनाई हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी सुधर जाए, इसको ध्यान में रखकर काम किया है।सबसे ज्यादा ध्यान रेल परिवहन पर दिया है।

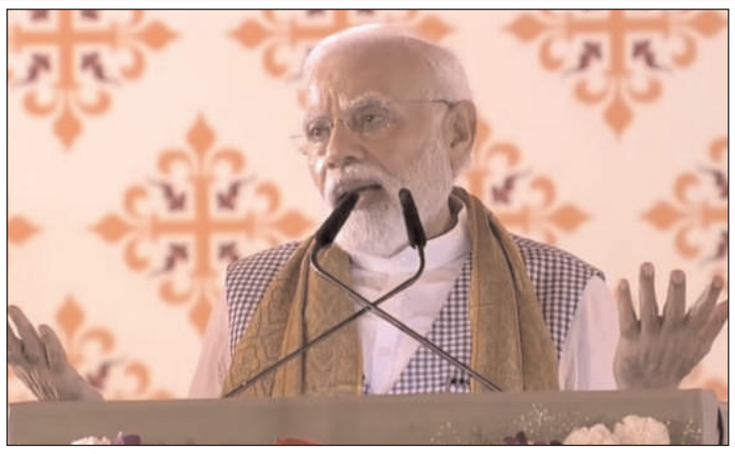

आज वंदेभारत एक्सप्रेस सुपरहीट- प्रधानमंत्री ने कहा कि काम की नियत का एक उदाहरण देता हूं। आजादी के बाद जब उनकी सरकार बनी तो 2014 तक केवल 19 शताब्दी एक्सप्रेस और 16 राजधानी एक्सप्रेस ही चल सकी। हमने 2014 के बाद से बीते नौ वर्षों में अब तक 25 वंदे भारत अत्याधुनिक सेमी हाईस्पीड ट्रेन चलाई। इसकी शुरूआत भी वाराणसी से की। आने वाले दिनों में इसकी संख्या और बढ़ने वाली है। अगर काम करने की नियत हो तो कोई भी परेशानी सामने नहीं आती। पीएम मोदी ने कहा कि आज वंदेभारत एक्सप्रेस सुपरहीट है। देश के कोने-कोने से इसे चलाने की मांग हो रही है।

दलाली खाने वालों की दुकान बंद- पीएम मोदी ने कहा कि जिन दलों ने अतीत में भ्रष्ट और नाकाम सरकारें चलाईं, वे आज लाभार्थी का नाम सुनकर तिलमिला जाते हैं। आजादी के इतने साल बाद लोकतंत्र का लाभ अब सही मायने में, सही लोगों तक पहुंचा है। पहले लोकतंत्र के नाम पर गिने-चुने लोगों के हित साधे जाते थे, गरीबों की कोई पूछ नहीं थी। भाजपा सरकार में लाभार्थी वर्ग सच्चे सामाजिक न्याय और सच्चे सेक्युलरिज्म का उदाहरण बन गया है। आज कमीशन लेने वालों की दुकान बंद, दलाली खाने वालों की दुकान बंद, घोटाले करने वालों की दुकान बंद...यानी अब ना ही कोई भेदभाव और ना ही कोई भ्रष्टाचार।

पीएम मोदी ने कहा कि गरीब का स्वाभिमान भाजपा सरकार की गारंटी है। उन्होंने कहा कि गरीब मां का बेटा मोदी गरीबों का अपमान नहीं सहेगा। कहा कि पहले की सरकारों ने गरीबों, रेहड़ी-पटरी लगाने वालों के लिए कुछ नहीं किया। आज जब गरीबों के लिए कुछ हो रहा है तो उन्हें दर्द होता है। यहां यूपी में भी करोड़ों लाभार्थियों ने मुद्रा योजना का लाभ उठाकर अपना काम शुरू किया है। इसमें सबसे अधिक लाभ गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक परिवार से जुड़े साथियों और महिला उद्यमियों को हुआ है। यही तो सामाजिक न्याय है, जिसकी गारंटी भाजपा सरकार दे रही है। पीएम मोदी ने कहा कि आज काशी सहित उत्तर प्रदेश को लगभग 12 हजार करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उपहार मिला है। हमने जो काशी की आत्मा को बनाए रखते हुए नूतन काया का संकल्प लिया है, यह उसका विस्तार है। इनमें रेल, रोड, पानी, शिक्षा, पर्यटन से जुड़े प्रोजेक्ट्स हैं। घाटों से जुड़े प्रोजेक्ट्स हैं। इन विकास कार्यों के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाई। बीते 9 वर्षों में काशी की कनेक्टिविटी को भी बेहतर करने के लिए अभूतपूर्व काम हुआ है। यहां जो विकास कार्य हो रहे हैं, वो रोजगार के अनेकों नए अवसर भी बना रहे हैं।

व्यस्तताओं के बावजूद भी सीएम योगी ने लगाया जनता दरबार, 200 लोगों की समस्या का किया समाधान

गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन की तैयारियों से जुड़ी व्यस्तता के बावजूद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार की सुबह जनता दर्शन करना नहीं भूले। समस्या के समाधान की उम्मीद लेकर गोरखनाथ मंदिर आए लोगों से उन्होंने बारी-बारी से मुलाकात की और समाधान के लिए आश्वस्त भी किया। इस दौरान उन्होंने छोटी से छोटी समस्या के प्रति संवेदनशील रहने का निर्देश अधिकारियों को दिया और कहा कि जनसमस्या के समाधान में कोई लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। पारदर्शिता के साथ संतुष्टिपरक समाधान पर उनका जोर रहा। मंदिर के दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने 200 से अधिक लोगों की समस्या सुनी। इस दौरान लोगों द्वारा समस्या समाधान का प्रार्थना पत्र उन्होंने विभागवार अधिकारियों को इस निर्देश के साथ सौंपा की समाधान जल्द से जल्द सुनिश्चित किया जाए। इलाज के लिए आर्थिक मदद की गुहार लेकर आए लोगों से उन्होंने कहा कि वह अपना इलाज सुनिश्चित करें, इसमें धन में दिक्कत नहीं आने दी जाएगी। मौके पर मौजूद अधिकारियों को उन्होंने निर्देश दिया कि हर जरूरतमंद को इलाज में मदद की कागजी औपचारिकता जल्द से जल्द पूरी कराए, जिससे कि समय पर सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

बीजेपी ने चार राज्यों के चुनाव प्रभारियों का किया एलान, भूपेंद्र यादव को मिली मध्यप्रदेश की कमान

नई दिल्ली। इस साल के अंत में चार राज्यों में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। भाजपा ने इन चुनावों के लिए करम कस ली है। शुक्रवार को भाजपा अध्यक्ष ने चार राज्यों के प्रभारियों का एलान किया है। जानकारी के मुताबिक, भूपेंद्र यादव को मध्यप्रदेश का प्रभारी नियुक्त किया गया है। वहीं, प्रकाश जावड़ेकर तेलंगाना का चुनाव प्रभारी नियुक्त किया गया है। प्रह्लाद जोशी को राजस्थान की कमान सौंपी गई है। बात करें छत्तीसगढ़ की तो ओम प्रकाश माथुर को छत्तीसगढ़ का चुनाव प्रभारी बनाया गया है।

निवेश मित्र पोर्टल पर आवेदनों के निस्तारण का मामला : दो साल बीते, पर तय नहीं हुआ लापरवाह अफसरों का दायित्व

लखनऊ। शासन के निर्देश पर न तो जनता व उद्यमियों के आवेदन निस्तारण हुआ और न ही लापरवाह अधिकारियों के दायित्व का निर्धारण ही हो सका है। निवेश मित्र पोर्टल पर ट्रेड लाइसेंस, इंडस्ट्रियल वाटर कनेक्शन, साइनेज प्रापर्टी, प्रापर्टी म्यूटेशन और ई-नगर सेवा से संबंधित आवेदनों का निस्तारण न होने पर शासन बीते दो वर्षों से अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करने का निर्देश देता आ रहा है, लेकिन अब तक निकायों द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई है। इस स्थिति पर शासन ने नाराजगी जताया है और सभी नगर आयुक्तों व अधिशासी अधिकारियों से रिपोर्ट तलब की है। बता दें कि आम जनता की सहूलियत के लिए नगर निकायों में ट्रेड लाइसेंस, इंडस्ट्रियल वाटर कनेक्शन, साइनेज प्रापर्टी, प्रापर्टी म्यूटेशन आदि से संबंधित आवेदनों के निस्तारण की ऑनलाइन व्यवस्था लागू की गई है । इन कार्यों के लिए ई-नगर सेवा और निवेश मित्र पोर्टल के माध्यम से आवेदन लेने की व्यवस्था है। जिसमें एक निश्चित समय सीमा के भीतर आवदेनों का

करना अनिवार्य था। इस व्यवस्था के लागू होने के बाद तमाम लोगों के आवेदन भी पोर्टल और ई-नगर सेवा पर आने भी शुरू हो गए, लेकिन नगर निकायों के स्तर पर इन आवेदनों का निस्तारण समय सीमा के भीतर नहीं हो पा रहा है। शासन स्तर पर हुई समीक्षा में पाया गया था कि अधिकांश नगर निकायों में निवेश मित्र पोर्टल और ई-नगर सेवा पर मिले ट्रेड लाइसेंस, इंडस्ट्रियल वाटर कनेक्शन, साइनेज प्रापर्टी, प्रापर्टी म्यूटेशन से संबंधित आवेदन लंबित हैं । इस पर शासन द्वारा इस लापवाही के लिए जिम्मेदार अधिकारियों का दायित्व निर्धारित करते हुए उनके बारे में रिपोर्ट तलब किया जा रहा है, लेकिन दो साल में किसी निकाय ने इस संबंध में रिपोर्ट नहीं भेजी। अब एक बार फिर स्थानीय निकाय निदेशालय ने सभी नगर निकायों से ऐसे लापवाह अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करते हुए रिपोर्ट मांगी है। स्थानीय निकाय निदेशालय की ओर से सभी नगर निगमों के नगर आयुक्तों और नगर पालिका परिषद और नगर पंचायतों के अधिशासी अधिकारियों को निर्देश भेजा गया है। जिसमें लंबित आवेदनों के साथ ही अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करते हुए तत्काल रिपोर्ट उपलब्ध कराने को कहा गया है।

बरेली में रफ्तार का कहर: कार की टक्कर से दो युवकों की मौत, 200 मीटर तक घिसटती बाइक, उड़ गए परखच्चे

बरेली। बरेली के हाफिजगंज इलाके में नरायन कॉलेज के समीप शुक्रवार दोपहर को तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक पर सवार दो युवकों की मौत हो गई। टक्कर के बाद अनियंत्रित हुई कार पेड़ों को तोड़ते हुए सड़क किनारे खंदी में पलट गई, जिससे कार चला रही शिक्षिका हो गई। भोजीपुरा क्षेत्र के गांव जनना लाडपुर निवासी योगेंद्र पुत्र वीरपाल और अमित यादव पुत्र ओमप्रकाश बाइक से नवाबगंज की तरफ से आ रहे थे। नरायन कॉलेज के समीप तेज रफ्तार से आ रही कार ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद कार में फंसी बाइक करीब 200 मीटर तक घिसटती चली गई। बाइक के परखच्चे उड़ गए। हादसे में योगेंद्र और वीरपाल की मौके पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उधर, कार की टक्कर से बाइक का एक पहिया निकल गया था, जो करीब 200 मीटर दूर पड़ा मिला। कार भी अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खंदी में पलट गई।

राहुल के विपक्षी एकता का 'दूल्हा' बनने की उम्मीद टूटी, लालू के इशारों का अब क्या होगा

पटना। पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व रेल मंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव को भी कांग्रेस के नंबर वन नेता राहुल गांधी को लेकर कोर्ट के आए ताजा फैसले ने सोचने के लिए मजूबर किया होगा। 23 जून को जब राहुल गांधी पटना आए थे और लालू प्रसाद ने उनकी शादी की बात कही तो राजनीतिक विश्लेषकों ने उन्हें इशारों में विपक्षी एकता के 'दूल्हे' के रूप में सजाने तक की बात मान ली। कहा गया कि लालू इशारे में भी बहुत गूढ़ बातें कह जाते हैं। तो, क्या अब विपक्षी एकता के 'दूल्हे' का यह विकल्प यहीं खत्म हो गया? 17-18 जून को बेंगलुरू में होने वाली विपक्षी एकता की बैठक में दूसरा 'दूल्हा' तय होगा?

संयोजक घोषित नहीं, मगर नाम तो यही- 12 जून की तारीख फेल होने के बाद भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जब 23 जून को पटना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के

खिलाफ देशभर के 15 दलों के नेताओं को बैठक में बुलाने में सफल रहे तो उनका संयोजक बनना तय था। लेकिन, अध्यादेश को लेकर कांग्रेस से टकराव के कारण जिस तरह से विपक्षी एकता की बैठक के बाद मीडिया से मुखातिब होने के काफी पहले आम आदमी पार्टी के दोनों नेता (दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पंजाब के सीएम भगवंत मान) निकल गए, उसके कारण सारी घोषणाएं टाल दी गईं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के संयोजन में बैठक की बात कही। बाकी नेताओं ने इस शब्द का इस्तेमाल भले नहीं किया, लेकिन बैठक का अगुवा कहते हुए बधाई जरूर दी। संयोजन-संयोजक की बात के बाद जब लालू प्रसाद मीडिया के सामने आए तो उन्होंने राहुल गांधी को जल्दी दूल्हा बनने के लिए कहा। इसपर हंसी तो हुई, लेकिन राजनीतिक विश्लेषकों ने इस बात को शादी से मोड़ते हुए विपक्षी एकता के दूल्हे (लीडर) की ओर मोड़ दिया।

त्रिपुरा विधानसभा में हंगामा, कार्यवाही में बाधा पहुंचाने के लिए 5 विधायक निलंबित

अगरतला। त्रिपुरा विधानसभा में पांच विधायकों को सदन में हंगामा करने पर निलंबित कर दिया। सदन के स्पीकर विश्वाबंध सेन ने सीपीआई (एम) विधायक नयन सरकार, कांग्रेस के सुदीप रॉय बर्मन और तीन टिपरा मोथा विधायक को सदन में अशांति फैलाने के लिए एक दिन के लिए निलंबित किया है। टिपरा मोथा के तीन निलंबित विधायकों में बृस्वकेतु देबबर्मा, नंदिता रियांग और रंजीत देबबर्मा का नाम शामिल है। विपक्षी दलों ने स्पीकर के इस फैसले का विरोध करते हुए सदन से बाहर चले गए। दरअसल, आज विधानसभा सत्र के दौरान भाजपा और टिपरा मोथा पार्टी के विधायकों के बीच बहस हो गई। विपक्षी दल के नेता अनिमेष देबबर्मा ने त्रिपुरा बागबासा विधानसभा के भाजपा विधायक जादव लक नाथ द्वारा पोर्न फिल्म देखने के मुद्दे पर सवाल किया। सदन के अध्यक्ष ने कुछ अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के बाद उनसे बात करने की बात कही, लेकिन विपक्षी दलों के विधायकों ने हंगामा और नारेबाजी शुरू कर दी। इसके बाद स्पीकर ने सदन से पांच विधायकों को निलंबित कर दिया।

सोशल मीडिया पर मामले से जुड़ा वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें विधायक आपस में भिड़ते दिखाई दे रहे हैं। वीडियो में यह भी देखा जा सकता है कि कुछ नेता स्पीकर की ओर कागज भी फेंक रहे हैं। विधायकों को समझाने की कोशिश भी की जा रही है, लेकिन मामला शांत नहीं हो रहा।

बारिशः फिर कराह उठी यूपी की राजधानी, आधे शहर में जलभराव, सड़कें धंसी, गिरीं दीवारें, बिगड़ी बिजली व्यवस्था

लखनऊ। बृहस्पतिवार को आधे शहर में रुक-रुक हुई तेज से बारिश से शहर में फिर जलभराव हुआ। हजरतगंज, अलीगंज, लालबाग, इंदिरा नगर, गोमती नगर, महानगर, विकास नगर में तो जोर की बारिश हुई मगर आलमबाग, आशियाना आदि इलाकों में मामूली बारिश हुई। जिससे इन इलाकों में जलभराव नहीं हुआ। तेज बारिश के कारण मौलवीगंज में गौसनगर का सुरंग नाला चोक होने 30 से अधिक घरों के अंदर पानी बैक फ्लो होने से भर गया। जिससे उनमें रहने वाले लोग घर में कैद हो गए। उनका फर्नीचर व खाने पीने का सामान भी खराब हुआ। इसके अलावा शहर के कई पॉश और आम इलाकों में नाला चोक होने और नाला-नालियों पर अतिक्रमण होने से जलभराव हुआ। बारिश के चलते सड़क धंसने और दीवार गिरने की घटनाएं भी हुईं।

मौलवीगंज के पार्षद मुकेश सिंह मोंटी ने बताया कि गौस नगर का सुरंग वाला हर साल चोक होता है। उसके बाद भी नगर निगम प्रशासन ने लापरवाही की। बारिश से पहले चील घर के पास नाले की ठीक से सफाई कराने की मांग की गई मगर केंद्रीय कार्यशाल के मुख्य अभियंता ने सफाई नहीं कराई। जिससे नाला चोक हो गया। इससे गौस नगर के 30 से अधिक घरों के अंदर तक पानी भर गया। घरों के बाहर करीब चार फिट पानी भरा है। ऐसे में बाहर भी लोग नहीं निकल पा रहे

हैं। उनको खाने-पीने का सामान पहुंचा रहे हैं। लोग पहली मंजिल पर रह रहे हैं। पानी भरने से उनके घरों का फर्नीचर व खाने पीने का सामान भी भीगने से खराब हो गया। नगर निगम की टीम को सूचना दी गई है। नगर निगम सहायक अभियंता किशोरी लाल ने बताया नाले से बैक फ्लो हो रहे पानी को रोकने केलिए बोरी लगाने काम किया जा रहा है। सुरंग कहां पर चोक है यह पता कर रहे है। टीम को बुला लिया है नाले को जल्द ही खोल दिया जाएगा। अलीगंज में पुरनिया चौराहा से इंजीनियरिंग कालेज तक सड़क के दोनों और गहरा नाला बना है। पहले इस रोड पर एक ही ओर नाला था। पानी न भरे इसके लिए जेनएनयूआरएम योजना में दूसरी पटरी भी नाला बनाया गया। इस सड़क पर दोनों कोचिंग, रेस्टोरेंट व कामर्शियल काम्पलैक्स हैं। इन सबसे नालों को पर कब्जा कर सीढ़ियां बना ली और जो फुटपाथ बचा उस पर ऊंचा कर कब्जा कर लिया। इससे सड़क पर आने वाला बारिश का पानी नाले तक पहुंचता ही नहीं और सड़क पर दो से तीन फिट पानी भरने वह तालाब बन जा रही है। पीएंडटी कालोनी और सीएसआई कालोनी के बाहर नगर निगम और पुलिस ने मिलकर फल मंडी बना दी है। जिनसे पैसा वसूलते हैं। यहां करीब 100 से अधिक ठेले वाले दुकान लगाते हैं जो पूरा कूड़ा नालें में भरते हैं। इसी तरह राम-राम बैंक, सेक्टर और इंजीनियरिंग कालेज तक नालें पर इतने कब्जे हैं कि नाला दिखता ही नहीं है। ऐसे में पानी सड़क पर बहता है।

'मुझे कोर्ट में पेश होने के लिए नहीं चाहिए छूट...' यौन शोषण मामले में अदालत के समन पर बोले बृजभूषण

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने महिला पहलवानों द्वारा पूर्व WFI अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर लगाए यौन शोषण के मामले में शुक्रवार को सुनवाई करते हुए उन्हें कोर्ट में पेश होने का निर्देश दिया था। कोर्ट का अदालत में पेश होने का निर्देश मिलने पर अब बृजभूषण सिंह ने अपनी प्रतिक्रिया दी है और कहा है कि मैं कोर्ट के सामने पेश होऊंगा। बृजभूषण शरण सिंह को अदालत में पेश होने का निर्देश मिलने के बाद उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि मैं 18 जुलाई को कोर्ट में पेश होऊंगा। मुझे अदालत में पेश होने से कोई छूट नहीं चाहिए। वहीं, शुक्रवार को पहलवानों द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोप के मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने आरोपपत्र पर संज्ञान लेते हुए भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष और सांसद बृजभूषण शरण सिंह और विनोद तोमर को समन जारी करते हुए अदालत ने उन्हें 18 जुलाई को अदालत में पेश होने का निर्देश देते हुए तलब किया है। बता दें कि महिला पहलवानों द्वारा लगाए गए आरोपों के बाद बृजभूषण शरण सिंह ने अलग-अलग मौकों पर मीडिया से मुखातिब होते हुए कहा था कि यह मामला कोर्ट में है और इसलिए मुझे नहीं लगता कि अब इस बारे में मुझे कुछ कहना चाहिए। दिल्ली पुलिस ने छह बालिग महिला पहलवानों के

मामले में बृजभूषण सिंह के खिलाफ आईपीसी की धारा 354 (अपमान), 354अ (यौन उत्पीड़न), 354D (पीछा करना) और 506 (1) (आपराधिक धमकी) के तहत अपराधों के लिए आरोप पत्र दायर किया था। वहीं, नाबालिग पहलवान (लड़की) के मामले में दिल्ली पुलिस ने पटियाला हाउस कोर्ट में कैंसिलेशन रिपोर्ट फाइल की थी।

संपादकीय

संकीर्ण सोच में बदलाव करने की जरूरत

मध्यप्रदेश में एक व्यक्ति के आदिवासी युवक के ऊपर लघुशंका करने की तस्वीर आने के बाद स्वाभाविक ही समाज में जड़ें जमाकर बैठी मध्ययुगीन सोच को लेकर चिंता जताई जा रही है। हालांकि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है, उसके घर पर बुलडोजर चला कर अवैध निर्माण ढहा दिया गया है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उस आदिवासी युवक के पांव पखारे और उससे माफी भी मांगी। मगर यह सवाल अपनी जगह है कि क्यों समाज में इस तरह की मानसिकता जड़ें जमाए बैठी है कि तथाकथित ऊंची जाति के लोग मौका मिलते ही किसी दलित, किसी आदिवासी की अस्मिता को कुचलने, उसका मान मर्दन करने में तनिक संकोच नहीं करते। बताया जा रहा है कि आदिवासी युवक पर लघुशंका करने वाला आदमी मध्यप्रदेश के एक विधायक का प्रतिनिधि है। जिस विधायक का प्रतिनिधि बताया जा रहा है, उस विधायक पर खुद भी दबंगई और आदिवासियों की जमीन हड़पने, अपनी आलोचना करने वाले पत्रकारों-संस्कृति कर्मियों-बुद्धिजीवियों के दमन आदि के अनेक आरोप लगते रहे हैं। जाहिर है, उनके प्रतिनिधि को इस तरह का कुकृत्य करने का साहस वहां से भी मिला होगा। सत्ता की ताकत मिलने के बाद इस तरह कानूनों की धज्जियां उड़ाने का यह अकेला उदाहरण भी नहीं है। हालांकि दलितों, आदिवासियों के मानवाधिकारों, उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करने के खिलाफ कड़े कानून हैं, मगर अक्सर सवर्ण कही जाने वाली जातियों के रसूखदार लोगों को उन कानूनों की धज्जियां उड़ाते देखा जाता है। यह केवल राजनीतिक ताकत हासिल कर चुके लोगों में नहीं, सामान्य लोगों में भी तथाकथित उच्चता के दंभ की वजह से प्रकट होता रहता है। इसकी एक वजह यह भी है कि कानून का पालन कराने वालों में बहुसंख्यक वही लोग हैं, जो समाज की उच्च कही जाने वाली जातियों से संबंध रखते हैं। इसीलिए अक्सर दलितों, आदिवासियों के खिलाफ जब अत्याचार की कोई घटना होती है तो अक्सर थानों में उसकी प्राथमिकी दर्ज करने में टालमटोल किया जाता है। अनेक बार बलात्कार की शिकार दलित महिलाओं को समझा-बुझा या डरा-धमका कर मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया जाता है। इस तरह एक भरोसा ऐसी जातियों के लोगों के मन में बना हुआ है कि अगर वे दलितों, आदिवासियों के साथ कुछ अमानवीय व्यवहार करते भी हैं, तो उन्हें कोई कठोर सजा नहीं मिलने वाली। मध्यप्रदेश में जिस व्यक्ति को आदिवासी युवक पर लघुशंका करते देखा गया, वह भी समाज की इसी संकीर्ण सोच से अनुप्राणित है। इसलिए बेशक उसे गिरफ्तार कर लिया गया है, उसके घर के कुछ हिस्सों को बुलडोजर से गिरा दिया गया है, मगर इससे उसकी सोच भी बदल गई है, इसकी गारंटी नहीं दी जा सकती। विचित्र है कि पढ़-लिख कर ओहदा हासिल कर लेने और राजनीतिक रसूख पा जाने के बाद भी जब लोगों की ऐसी मानसिकता नहीं बदलती, तो समाज में तथाकथित नीची कही जाने वाली जातियों के प्रति सदियों से जड़ें जमाई सोच को बदलना कितना आसान होगा। इस दिशा में राजनीतिक इच्छाशक्ति का सर्वथा अभाव दिखता है। राजनीतिक दल वोट के लिए बड़े-बड़े सिद्धांतों की बातें करते हैं, मगर अफसोस कि वे अपने कार्यकताओं में उसे व्यावहारिक रूप में नहीं उतार पाते। जब तक व्यावहारिक धरातल पर दलितों, आदिवासियों के प्रति सम्मान पैदा नहीं होगा, उनके साथ ऐसी घटनाएं नहीं रुकने वाली।

जो हैं क्षेत्रीय दल!

है खतरे की घंटी ।
जो हैं क्षेत्रीय दल ।।
मुश्किल में अब दिख रहा ।
आने वाला कल ।।
बार बार बढ़ने का ।
चल रहा प्रयास ।।
आता है जब वक्त ।
ना होता कुछ खास ।।
गुणा गणित ऐसा ।
बिगड़ रहा सब खेल ।।
होता ध्वस्त अनवरत ।
आपसी अब मेल ।।
राह नहीं आसान ।
आया बुरा दौर ।।
किंकर्तव्यविमूढ़ हुए ।
जो दिखते सिरमौर ।।

–कृष्णेन्द्र राय

लोगों के स्वास्थ्य पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की ओर से हो रहा है जानलेवा हमला

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य पदार्थ एवं डिब्बाबन्द उत्पादों के सेहत पर पड़ने वाले घातक प्रभावों पर दशकों से विमर्श होता रहा है, लेकिन जैसे-जैसे मर्ज की दवा की रोग बढ़ता गया, वाली स्थिति देखने को मिल रही है। अब जाकर विभिन्न शोधों के निष्कर्षों के आधार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने खाद्य पदार्थों व पेय पदार्थों में मिलाये जाने वाली कृत्रिम मिठास को कैंसर को बढ़ाने वाला कारक माना है। बात केवल कृत्रिम मिठास की नहीं है, तरह-तरह से भारतीय भोजन के स्वास्थ्यवर्द्धक कारणों को कुचलने एवं स्वास्थ्य पर हो रहे जानलेवा हमलों की भी है।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) ने हाल ही में अपने एक अध्ययन में बताया कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बेची जाने वाली कुछ स्वादिष्ट खाद्य सामग्रियों में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तत्व हैं। इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। चाय और भुजिया, कोल्ड ड्रिंक्स और समोसा, बटर चिकन और नान का मजा लेने वाले भारतीयों में बहस छिड़ गई कि आखिर यह कैसे नुकसानदेह साबित हो सकता है। भारत में नेस्ले कम्पनी द्वारा बनाई जाने वाली मैगी पर गुणवत्ता को लेकर उठे सवाल भी हैरान करने वाले हैं। मिलावट वाले खाद्य पदार्थ एवं डिब्बाबन्द उत्पादों के बढ़ते प्रचलन से देश के लोगों का स्वास्थ्य दांव पर लगा है, लेकिन उन पर नियंत्रण की कोई स्थिति बनती हुई नहीं दिख रही है। विदेशी पूंजी एवं रोजगार की आड़ लेकर इन कम्पनियों की आर्थिक महत्वाकांक्षाओं, गलत हरकतों एवं स्वास्थ्य को चौपट करने वाली स्थितियों को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। देश में गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ ही लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं, इसके लिये सख्त कानून के साथ ही राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य उत्पादों से अस्वास्थ्य एक व्यापक समस्या बन गयी है। शिक्षित-अशिक्षित, गरीब-अमीर, स्त्री-पुरुष, युवा-प्रौढ़ सभी इन उत्पादों के आदी होकर परेशान हैं। इनके अधिक सेवन के कारण सबको किसी-न-किसी बीमारी की शिकायत है। चारों ओर बीमारियों का दुर्भेद्य घेरा है। निरन्तर बढ़ती हुई बीमारियों का प्रमुख कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य उत्पादों का भारतीय भोजन में शामिल होना है। इन बीमारियों को रोकने के लिये नई-नई चिकित्सा पद्धतियां एवं आविष्कार असफल हो रहे हैं। जैसे-जैसे विज्ञान रोग प्रतिरोधक औषधियों का निर्माण करता है, वैसे-वैसे बीमारियां नये रूप, नये नाम और नये परिवेश में प्रस्तुत हो रही हैं, इन बढ़ती बीमारियों का कारण जंक फूड, डिब्बाबन्द उत्पाद एवं कृत्रिम मिठास है। जांच एजेंसियों की लापरवाही, संसाधनों के अभाव, भ्रष्टाचार, केन्द्र-राज्य सहयोग का अभाव और लचर दंड-व्यवस्था का खामियाजा उपभोक्ताओं को अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालकर चुकाना पड़ रहा है। दुनिया में बहुराष्ट्रीय शीतल पेय कंपनियों के पेय, सोडा, च्यूइंग गम आदि पदार्थों में कृत्रिम मिठास का धड़ल्ले से प्रयोग किया जाता है। दरअसल, मनुष्य पर कैंसरकारक असर के बाबत अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी आईएआरसी और विश्व स्वास्थ्य संगठन के कैंसर अनुसंधान प्रभाग के अध्ययन का हवाला दिया गया है। निस्संदेह, इन निष्कर्षों ने दुनियाभर के उपभोक्ताओं की चिंताओं को बढ़ा दिया है, जो लंबे समय से इन उत्पादों के सेवन को लेकर दुविधा में थे। विशेषज्ञों ने उस पुरानी दलील को तरजीह नहीं दी कि एक सीमित मात्रा में कृत्रिम मिठास से बने उत्पाद घातक नहीं होते और इनका उपयोग किया जा सकता है। निश्चित ही बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपने मुनाफे के लिये जन-जन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रही है, बावजूद इसके दुनिया के शक्तिशाली देशों में प्रभावी इन कंपनियों के खिलाफ कोई भी बात नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाती थी। भारत में भी ऐसी कम्पनियां तेजी से पांव पसार रही हैं।

भारतीय परिवारों में इंस्टैंट नूडल्स, आलू की चिप्स, कोल्ड ड्रिंक्स ने कहर बरपाया है, ये तमाम खाद्य एवं पेय उत्पाद भले ही जायकेदार होते हैं लेकिन इनका सेवन स्वास्थ्य को चौपट कर रहा है। इनका प्रचलन बढ़ता जा रहा है, आखिर क्यों न बढ़े, हमारे तमाम बड़े सुपरस्टार्स उनका विज्ञापन जो करते हैं। आखिर, कोई ऐसा उत्पाद हानिकारक कैसे हो सकता है, जिसके विज्ञापन में किसी प्यारे-से बच्चे की आवाज सुनाई देती हो या जिनमें ह्यअपने ग्रैंडपैरेंट्स से प्यार करोह्न ह्यकुछ मीठा हो जायेह्न जैसे विज्ञापन जन्मदिन से लेकर शादी तक हर अवसर के लिये पसरे हैं, जो भावनात्मक मूल्यों से खिलवाड़ करते हैं। यदि हम इन विज्ञापनों पर भरोसा करें तो पाएंगे कि कैडबरी, चिप्स और कोला का सेवन करने वाले लोग साधारण लोगों की तुलना में ज्यादा प्रेमपूर्ण, सभ्य, आधुनिक व संवेदनशील होते हैं और बर्गर और फ्राइड चिकन के कारण आप बेहतर दोस्त साबित हो सकते हैं। तो आखिर माजरा क्या है? कैडबरी ने तो भारतीय देशी मिठाइयों के भविष्य को ही धुंधला दिया है।

स्वास्थ्य स्थितियां बेहद चिंताजनक हैं। भारतीय मध्यवर्ग की डाइट बद से बदतर होती जा रही है। जैसे-जैसे मध्यवर्ग की आमदनी और व्ययशीलता बढ़ती जा रही है, उसे अपने शरीर में कैलोरीज की मात्रा बढ़ाने के और मौके मिल रहे हैं। यूं भी भारतीय परंपरागत रूप से भोजनप्रेमी होते हैं। ऐसे में अगर जायकेदार लेकिन सस्ते खाद्य पदार्थ आसानी से मुहैया हों तो क्या कहने। भले ही यह जायका जहरीला हो। इसी में जागरूकता की कमी और अनैतिक विज्ञापन संस्कृति को भी जोड़ लें तो हम पाएंगे कि हम भयावह स्थिति की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। यह जांचने के लिए हमें किसी लैबोरेटरी स्टडी की जरूरत नहीं है कि हम जो खा रहे हैं, उनमें से कुछ चीजें हमारी सेहत के लिए वाकई नुकसानदेह हैं। एक ज्यूस ब्रांड ऐसा आमरस बेचता है, जिसके हर गिलास में आठ चम्मच शकर हो सकती है। इंस्टैंट नूडल्स का एक पैक अशुद्ध और अपरिष्कृत स्टार्च से बढ़कर कुछ नहीं होता। बच्चों को दूध के साथ पिलाए जाने वाले जौ निर्मित तथाकथित पोषक आहार शकर से भरे होते हैं। नाश्ते में जो महंगे खाद्य पदार्थ लिए जाते हैं, उनकी हेल्थ वैल्यू एक मामूली रोटी जितनी भी नहीं होती। तली हुई आलू की चिप्सें और पेटीज बर्गर निश्चित ही सेहतमंद चीजें नहीं हैं। इसके बावजूद इन उत्पादों के निमार्ता ब्रांड टीवी पर विज्ञापन के लिए करोड़ों रुपए खर्च करते हैं ताकि हमारे मन में इन उत्पादों के प्रति चाह जगाई जा सके।

इन उत्पादों के कारण हमारा वजन बढ़ रहा है, तनाव एवं अवसाद को जी रहे हैं, मधुमेह के रोगी चरम पर पहुंच रहे हैं, हृदयरोग के आंकड़े भी इन खाद्य पदार्थों के बढ़ते प्रचलन के कारण चौंकाने वाले हैं। निश्चित रूप से पूरी दुनिया में घातक कृत्रिम मिठास, डिब्बा बन्द उत्पाद एवं जंक फूड के दुष्प्रभावों को लेकर नये सिरे से बहस का आगाज होगा। सवाल केवल बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों का ही नहीं है, जिन मिठाइयों और नमकीन को हम अपनी परंपरागत विरासत का एक हिस्सा समझते हैं, घरों और रेस्तरांओं में जिस तरह का तरीदार शोरबा परोसा जाता है, रेलवे स्टेशनों पर जिस तरह के समोसे और पकौड़े बेचे जाते हैं, वे सभी हमारे लिए नुकसानदेह हैं। लेकिन न तो सरकार, न ये कंपनियां और न ही हम इसे लेकर चिंतित हैं। हो सकता है आने वाले कुछ सालों में हमें इसकी कीमत चुकानी पड़े। आज हम जिस समृद्धि पर गर्व करते हैं, वही हमारे लिए महंगा सौदा साबित हो सकती है। जिन लोगों के पास खाने को कुछ नहीं है, वे भोजन को बुनियादी जरूरत मानते हैं, लेकिन जिनके सामने भरण-पोषण की कोई समस्या नहीं है, वे इसे आनंद का एक और माध्यम मानते हैं।

दशमत का मान बढ़ाकर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने समाज को दिया बड़ा संदेश

ऐसा माना जाता है कि सत्ता व्यक्ति को दंभी बनाती है। कुर्सी पर बैठा व्यक्ति अपने आप को खुदा समझने लगता है। अहंकार का स्तर इतना अधिक होता है कि संवेदनाएं उसे छू नहीं पातीं। जनता के मर्म से परे, वह सत्ता के मद में चूर रहता है। परंतु मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने आचार-व्यवहार से बार-बार इस सोच को गलत साबित किया है। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री के रूप में अपना चौथा कार्यकाल पूरा करने जा रहे शिवराज सिंह चौहान के आस-पास भी अहंकार फटकता नहीं है, आज भी संवेदनशीलता, विनम्रता, कृतज्ञता एवं सरलता ही उनके संगी-साथी हैं। सीधी जिले के शर्मनाक कृत्य के बाद मुख्यमंत्री ने जिस तरह अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं, उनमें गहरा संदेश छिपा है। मनुष्य का आत्मसम्मान सर्वोपरि है। प्रत्येक व्यक्ति को उसे वह सम्मान देना ही होगा, मनुष्य होने के नाते जिसका वह अधिकारी है। सामर्थ्यशाली व्यक्ति का पुरुषार्थ कमजोर और असहाय व्यक्ति का शोषण करने में नहीं है अपितु उसकी जिम्मेदारी है कि वह पीड़ित व्यक्ति का हाथ पकड़कर, साथ बैठकर सुख-दुःख की बात करके और आत्मीयता से गले लगाकर उसका साहस बने। शिवराज सिंह चौहान यही कर रहे हैं। एक मुखिया को कैसा होना चाहिए, अनुसूचित जनजाति समुदाय के बंधु दशमत को हृदय से लगाकर, उन्होंने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। पीड़ित के दुःख को बाँटने के साथ ही मुख्यमंत्री ने यह भी संदेश दिया है कि अपराधी कोई भी हो, मानवता को शर्मसार करने के बाद वह बच नहीं सकता। अपने किए की सजा उसे भोगनी ही पड़ेगी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से असहमति रखने वाले और उनके राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी यह कह रहे होंगे कि पहले भाजपा का कार्यकर्ता किसी व्यक्ति पर पेशाब करे और फिर मुख्यमंत्री उसके पैर धोयें, यह प्रायश्चित्त नहीं बल्कि सरकार की बदनामी को ढंकने के लिए की गई नौटंकी है। निकट भविष्य में विधानसभा चुनाव न होते, तब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान यह सब नहीं कर रहे होते। कहने को कुछ भी कहा जा सकता है, किसी को कोई रोक नहीं सकता। लेकिन क्या कहने वाले यह बता सकते हैं कि इससे पहले अमानवीय अपराध का प्रायश्चित्त करते हुए उन्होंने किसी और मुख्यमंत्री को देखा है? उत्तर है- नहीं। जिस व्यक्ति का मान-मर्दन किया गया हो, समाज में उसके सम्मान को रेखांकित और सुनिश्चित करने के लिए किस-किस मुख्यमंत्री ने कब-कब पीड़ित के चरण धोये हैं? इसके लिए सत्ता का दंभ, श्रेष्ठ और विशिष्ट होने का अहंकार छोड़ना पड़ता है। अंगुलियां उठाने वाले खेमे में कौन है, जो संवेदनशीलता एवं विनम्रता में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के पासंग भी ठहरता हो?

प्रदेश के मुखिया की जिम्मेदारी संभालने के पहले ही दिन से उन्होंने मनुष्यता का सम्मान सुनिश्चित किया है। गरीबों, वंचितों एवं वयोवृद्धों के मान-सम्मान को बढ़ाते हुए शिवराज सिंह चौहान हजारों तस्वीरों में मिल जाएंगे। उन्हें नजदीक से जिसने भी देखा है, ऐसा ही सहज-सरल पाया है। किसी के पैर धोकर शिवराज अपनी विनम्रता पहली बार प्रकट नहीं कर रहे हैं। अपने जन्मदिन पर वे सफाईकर्मियों के पैर धोकर उनका सम्मान कर चुके हैं। कन्यापूजन के दौरान वे विभिन्न जाति-बिरादरी की कन्याओं के पैर प्रतिवर्ष पखारते हैं। यह सब वे वोटों की राजनीति के लिए भी नहीं करते हैं। याद हो कि 19 जुलाई 2019 को झारखंड में प्रवास के दौरान उन्होंने एक जनजातीय परिवार में भोजन किया और वहीं एक वृद्ध महिला के पैर धोकर, आत्मीयता प्रकट की थी। झारखंड में तो उन्हें न चुनाव लड़ना था और न ही वे वहाँ मुख्यमंत्री बनने वाले थे। दरअसल, मनुष्यता का सम्मान करने का यह उनका अपना तरीका है, जो उन्हें अपनी सनातन संस्कृति से विरासत में मिला है।

सीधी के दशमत के साथ बुधवार को जब उन्होंने पौधा रोपा, तब उन्होंने ट्वीट में कहा- ह्वएक ही चेतना सब में हैं। वृक्ष बिना किसी भेदभाव के सबको प्राणवायु देते हैं। हम भी वृक्ष जैसे बनें। दशमत जी के साथ पौधारोपण कियाह्न। इसके अलावा उन्होंने इस संबंध में बुधवार को दो और ट्वीट किए, जिनमें उनकी संवेदनाओं को स्पष्टतौर पर अनुभव किया जा सकता है। मुख्यमंत्री लिखते हैं- ह्वमन दुःखी है; दशमत जी आपकी पीड़ा बाँटने का यह प्रयास है, आपसे माफी भी माँगता हूँ, मेरे लिए जनता ही भगवान हैह्न। अपने राज्य के एक व्यक्ति के अपमान पर मुखिया का इस प्रकार द्रवित होना, बड़े दिलवाले मुखिया की पहचान है। दशमत के पाँव धोने का वीडियो साझा करते हुए उन्होंने लिखा है- ह्वयह वीडियो मैं आपके साथ इसलिए साझा कर रहा हूँ कि सब समझ लें कि मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान है, तो जनता भगवान है। किसी के साथ भी अत्याचार बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। राज्य के हर नागरिक का सम्मान मेरा सम्मान हैह्न। यह जो भाव है, यही मुख्यमंत्री की संवेदनाओं के केंद्र में है। ऐसे राजनेता विरले ही होते हैं, जिनके लिए राजनीति में भावनाएं एवं संवेदनाएं सर्वोपरि होती हैं।

जरा सोचिए, सरकार का क्या काम है? अपराधी के विरुद्ध कानून सम्मत कार्रवाई करना और पीड़ित को न्याय दिलाना। यह काम तो मुख्यमंत्री एक ही दिन में कर चुके थे। जैसे ही घृणित अपराध का वीडियो सामने आया, मुख्यमंत्री ने घटना के मर्म एवं संवेदनशीलता को समझते हुए तत्काल प्रशासन को कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश जारी कर दिए। रात बीतने से पहले ही आरोपी को दबोच कर सलाखों के पीछे डाल दिया गया। निष्पक्षता के साथ आरोपी के अवैध निर्माण को ढहा दिया गया। इस मामले को जातीय रंग देने वाले परंपरागत विघ्नसंतोषी भी सरकार की निष्पक्ष एवं कठोर कार्रवाई से संतुष्ट हो गए। परंतु मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के लिए यह मामला इतना भर नहीं था। अपने ही राज्य में मानवता के घोर अपमान पर एक मुखिया का हृदय कैसे शांत रह सकता था। मुख्यमंत्री आवास में हम सबने जो दृश्य देखा, उससे दो व्यथित हृदयों (दशमत और शिवराज सिंह चौहान) को शांति मिली होगी। हालांकि, अब तक सामने आई जानकारी के अनुसार यह घटना उस समय की है, जब राज्य में शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री नहीं थे। लगभग तीन वर्ष पहले हुए अपराध का वीडियो अब क्यों जारी किया गया, इसकी पड़ताल अवश्य होनी चाहिए। बहरहाल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने आचरण से एक बड़ी लकीर खींचकर समाज को संदेश दिया है कि मनुष्यता का अपमान करने से बड़ा अपराध कोई नहीं है।

बुजुर्गों के प्रति शिथिल होती मानवीय संवेदनाएँ

वर्तमान दौर में मानवीय संवेदनाएं खत्म हो रही हैं। यह कहना गलत नहीं होगा, क्योंकि आए दिन देश के किसी न किसी कोने से सामाजिकता तार-तार करने वाली खबरें मीडिया जगत की सुर्खियां बन रही है। अभी हाल ही में अलवर जिले में दो निर्दयी बेटों ने महज 4 बीघा के जमीन के लालच में अपनी ही जन्मदात्री माँ के हथौड़े से पैर तोड़ दिए। जबकि पिता को भी गम्भीर चोट पहुंचाई है। बच्चे अपनी माँ की जमीन को पहले भी फर्जी तरीके से अपने नाम करवा चुके है बाकी जमीन को भी अपने नाम कराना चाहते थे, जब माँ ने बेटो की बात नहीं मानी तो कलियुगी बेटे माँ के प्राण के ही प्यासे बन गए। ये हमारे समाज की कोई पहली और आखिरी घटना नहीं है। जब चन्द रुपए पैसे, जमीन जायजाद के लालच में बच्चे अपने ही माँ बाप के दुश्मन बन बैठे हो। इससे पहले भी भोपाल के कुटुंब न्यायालय में एक बुजुर्ग दम्पति को उसके अपने ही बेटे ने यह पूछने पर मजबूर कर दिया कि, क्या कुत्ता बाप से ज्यादा उपयोगी होता है? सोचिए कितना निर्दयी बेटा होगा जिसके लिए कुत्ता अपने पिता से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। एक पिता दिन रात मेहनत करके अपने बच्चों की परवरिश करता है। जब वही बच्चे अपने माँ बाप को घर से बेघर कर दें। फिर मानवीय संवेदना का पतन होना स्वभाविक है। ऐसे में हम अतीत के उच्च आदर्शों को भूलकर आधुनिक बन भी गए तो क्या मानव कहला सकेंगे?

इससे पहले भी मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले में एक कलियुगी बेटे ने मानसिक रूप से कमजोर माँ की मोगरी से पीटकर हत्या कर दी थी। क्योंकि वह अपनी माँ से परेशान हो चुका था। ऐसे में इस कलयुगी बेटे की मृत माँ की आत्मा जहां कहीं भी होगी। सवाल तो बहुत उठे होंगे उसके जेहन में, कि आखिर इसलिए तो नौ माह पेट में नहीं रखा था? आखिर कसूर क्या था मेरा, जो मेरे साथ ऐसा सलूक किया? बेटा अपनी माँ के त्याग को कैसे भूल गया? जिस माँ ने खुद को कष्ट देकर अपने जिगर के टुकड़े का पालन-पोषण कर बड़ा बनाया। इसलिए तो नहीं कि वही बेटा उसी माँ के लिए काल बन जाएं। लेकिन वर्तमान दौर में ऐसी मानवीय संवेदनाओं का ह्रास हो चला हो। तभी तो किसी गीतकार ने यह लिखा था कि पूत-कपूत सुनें हैं, पर ना माता सुनी कुमाता। जब भी इस गाने को लिखा गया होगा। लिखने वाले ने शायद वर्तमान स्थिति को भांपकर ही इसके बोल लिखें होगें। तभी तो वर्तमान दौर में जानवरों को पालना फैशन बन गया है जबकि माँ बाप वृद्धाश्रम की खाक छानने को मजबूर हो रहे हैं।

ऐसे में सवालों की फेहरिस्त लम्बी है। भारत की पुरातन संस्कृति और सभ्यता तो ऐसी कतई नहीं थी। फिर आज क्यों हमारा समाज और देश अपनी दिशा से भटक रहा है? हम शिक्षा के पैमाने पर अंकों के मामले में भले ही आगे बढ़ रहे हैं। पर अपने नैतिक मूल्यों और समाज के प्रति कर्तव्यों को तिलांजलि क्यों दे रहे हैं? हमारा समाज अपने बुजुर्ग माता-पिता पर ही अत्याचार कर रहा। फिर ऐसे में कैसे उम्मीद लगाई जाए, कि वह किसी दूसरे की जान की परवाह करेगा। आज समाज आधुनिक होने का दम्भ तो भर रहा। पर शायद वह यह भूल गया है, कि सामाजिक व्यवस्था और घर-परिवार सिर्फ इन भौतिक वस्तुओं से नहीं चलते। हमें एक बेहतर समाज निर्माण के लिए बेहतर सोच रखनी होगी। तभी देश और समाज की बनी-बनाई व्यवस्था चल पाएगी। वरना सबकुछ जंगलराज में तब्दील हो जाएगा।

हमारी संस्कृति में घर के बड़े-बुजुर्गों की बात का सम्मान करना सदियों की परंपरा और संस्कृति का हिस्सा रही है। फिर जिक्र चाहें श्रीराम का हो। जिन्होंने अपने पिता की बात का मान रखने के लिए वन जाने का निश्चय किया या फिर श्रवण कुमार का। जिन्होंने अपने माता-पिता को कंधे पर बैठाकर तीर्थ यात्रा कराई हो। ये सच है कि आज के दौर में कोई भी व्यक्ति श्रवण कुमार कोई नहीं बन सकता। पर अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा तो की ही जा सकती है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए आज के समाज का! लोग खूबसूरत पहनावे और भौतिक सुख-सुविधाओं से लैस होकर खुद को स्मार्ट समझने लगे है। लेकिन वास्तव में दिलों - दिमाग से उतने ही घिनौने और कंगाल होते जा रहे हैं। ऐसी आधुनिकता और शिक्षित समाज किस काम का जो अपने बुजुर्ग सदस्यों को अकेलेपन में जीवन बिताने के लिए आश्रम में छोड़ दे, अथवा अपने ही हाथों से उनकी जीवनलीला समाप्त कर दे।

ऐसे में सवाल तो बहुत है कि आखिर हमारे समाज को हुआ क्या है? क्यों आज समाज में एक ऐसा तबका हावी हो रहा, जो अपनों की ही जान लेने पर उतावला हो रहा है। वृद्धजनों के लिये बुनियादी सुविधाओं जैसे- भोजन, स्वास्थ्य, घर तथा अन्य आवश्यकताओं की अनुपलब्धता उनके मानवाधिकारों का हनन तो है ही। साथ में यह संविधान के अनुच्छेद-21, जो कि प्रत्येक मनुष्य को गरिमापूर्ण तथा स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार देता है, उसके साथ भी खिलवाड़ है और ऐसा खिलवाड़ अगर अपने ही कर रहे। ऐसे में समझ सकते हमारा समाज अंदर से कितना खोखला होता जा रहा।

वैसे पिछले कुछ दशकों में हमारे सामाजिक मूल्यों में काफी बदलाव आ गया है, तभी सरकार को साल 2007 में माता पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण और कल्याण कानून ही नहीं बनाना पड़ा। बल्कि वरिष्ठ नागरिकों के हितों की रक्षा और सम्मानपूर्वक जीवन के लिए न्यायपालिका को भी कड़े कदम उठाने पड़े। यह वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा के लिए सम्बल तो दे रहा है। बावजूद इसके आए दिन देश के किसी न किसी कोने से माँ बाप पर अत्याचार की खबरें भी आ रही है। इसके लिए सिर्फ सरकार ही नहीं परिवार को भी अपने बुजुर्ग माता पिता की जिम्मेदारी उठानी होगी। उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार देना होगा। तभी हमारा वर्तमान और भविष्य सुरक्षित हो सकेगा। वरना जिस तरह से हम अपने माँ बाप को घर से बेघर कर रहे है। कल हमारा भी बुढ़ापा आएगा और हमारे बच्चे भी वही सब देखेंगे और सीखेंगे जो हम आज अपने माता-पिता के साथ कर रहे है।

ब्लॉक प्रमुख बृजेंद्र सिंह ने किया पौधारोपण अभियान का शुभारंभ

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर शुक्रवार को बाराचवर ब्लॉक स्थित आर एस कान्वेंट स्कूल में ब्लॉक प्रमुख विजेंद्र सिंह ने पीपल के पौधे का रोपण कर वन विभाग द्वारा चलाए जा रहे बृहद पौधरोपण अभियान का शुभारंभ किया। ब्लॉक प्रमुख ने स्कूल के छात्र छात्राओं में आम, अमरूद, सागवान, पीपल और अन्य छायादार पौधों का वितरण भी किया। इस अवसर पर वन क्षेत्राधिकारी आनंद शेखर और वन दरोगा मुकेश राय ने मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख विजेंद्र सिंह को स्मृति चिन्ह भेट कर सम्मानित किया। वन महोत्सव के संदर्भ में वन क्षेत्राधिकारी आनंद शेखर ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया की शासन द्वारा संचालित वन महोत्सव में 1 जुलाई से 7 जुलाई तक अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण कराया जाना है। उन्होंने आग्रह किया की अधिक से अधिक पौधोंरोपण करें। यह बताया की पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत बड़ा योगदान है।पर्यावरण प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। वनों की कटाई बहुत तेजी से हो रही है। इसका असर मानव जीवन पर पड़ रहा है। इसको रोकने के लिए पेड़ पौधों की अधिक संख्या में लगाकर देखभाल करने की जरूरत है, ताकि आने वाले समय में पर्यावरण संतुलन बना रहे। बच्चों से मुखातिब होकर वन दरोगा मुकेश चंद्र राय ने कहा कि पौधरोपण का उद्देश्य वनों को बढ़ावा देना, भूमि सुधार व पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना है। हमारे सनातन संस्कृति में वृक्षों, नदियों, पर्वतों,जड़ी बूटियां को अति महत्वपूर्ण स्थान दिया गया और उनकी पूजा की जाती है। इसलिए आप सभी पर्यावरण की रक्षा तथा मानव कल्याण के लिए अधिक मात्रा में पौधरोपण करें। इस दौरान स्कूल के संरक्षक परमहंस सिंह, प्रबंधक यशवंत सिंह, प्रधानाचार्य अर्जुन राम पाल, कोऑर्डिनेटर अरुण शर्मा, वन रक्षक सुखेन यादव, राम अवध माली, छोटू यादव, सोहन आदि मौजूद रहे।

प्रधान ने सौंपी पीएम आवास की चाभी, लाभार्थियों के खिले चेहरे

प्रखर केराकत जौनपुर। राज्य सरकार के निदेर्शानुसार आजादी के अमृत महोत्सव के तहत डेडूवाना गांव में शुकवार की दोपहर प्रधानमंत्री आवास निर्माण पूर्ण किए गए आवासों के लिए लाभार्थियों का गृह प्रवेश कार्यक्रम का आयोजन ग्राम प्रधान शैब्या सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानमंत्री के सीधे संवाद के साथ किया गया तत्पश्चात आधा दर्जन आवास लाभाथीयो को ग्राम प्रधान शैब्या सिंह ने आवास की चाभी दी। आवास की चाभी मिलते ही लाभार्थियों के चेहरे खुशी से खिल उठे लाभार्थियों ने खुशी का इजहार करते हुए सरकार का धन्यवाद किया। ग्राम विकास अधिकारी आसिफ अंसारी ने बताया कि शासन प्रशासन द्वारा गांव में आवास विहीन लोगो को चयनित कर प्रधानमंत्री आवास तथा मुख्यमंत्री आवास प्रदान किया जा रहा है ।ऐसे पात्र धारक लोग जो सरकार द्वारा प्रदत्त आवास से वंचित रह गए हैं उन्हें भी जल्द ही जांच कर आवास दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अगर गांव में किसी प्रकार की कोई समस्या आती है तो ग्राम प्रधान से मिलें। इस अवसर पर प्रधान प्रतिनिधि अतुल कुमार सिंह, पंचायत सहायक पूजा सिंह, आवास लाभार्थी दुर्गेश यादव, अभय सिंह, रियाज, अरविंद पाठक, विनोद पाठक व प्रमोद पाठक समेत आदि ग्रामीण उपस्थित रहे।

शराब पीकर घर आया तो पत्नी ने खाना देने से किया मना, नाराज पति ने पीट पीट कर उतारा मौत के घाट

बहराइच। बहराइच जिले में कोदही गांव में गुरुवार की देर रात एक शराबी पति ने अपनी ही पत्नी को पीट पीट कर मौत के घाट उतार दिया। उसके बाद पत्नी को जिला अस्पताल लेकर पहुंचा जहां चिकित्सकों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी बौंडी पुलिस को दे दी गई है। थाना बौंडी क्षेत्र के ग्राम पंचायत कोदही गांव निवासी संगीता(25) पत्नी दिनेश को अपने पति को शराब पीने से मना करना भारी पड़ गया। शराब के नशे में नशेड़ी पति ने अपनी पत्नी की पीट पीट कर हत्या कर दी। पत्नी को बेहोश समझकर कर दिनेश ने तीन बाल्टी पानी भी महिला के ऊपर डाला। जब महिला को होश नहीं आया तो पति दिनेश ने पत्नी संगीता को जिला अस्पताल लेकर पहुंचा। जहां चिकित्सकों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। पति दिनेश कुमार ने बताया कि पत्नी संगीता रोज शराब पीने के लिए मना करती थी। गुरुवार की देर रात फखरपुर से दिनेश शराब पीकर घर लौटा तो पत्नी ने नाराजगी जाहिर करते हुए खाना न देने की बात कही इसी बात से गुस्साए पति दिनेश ने चुल्हा फुंकने वाली फुंकनी से पिटाई कर दी। गंभीर चोट पहुंचने से पत्नी संगीता बेहोश हो गई। इसके बाद वह संगीता को जिला अस्पताल लेकर पहुंच गया। मामले की जानकारी मिलन पर थानाध्यक्ष गणनाथ मौके पर पहुंचे। एसओ ने बताया महिला के शरीर के चोट के निशान को देखा है। शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी। कोदही गांव निवासी दिनेश की पहली पत्नी की दो साल पहले एक सड़क हादसे में मौत हो गई थी।इसके बाद दिनेश के तीन बच्चे बिना मां के हो गए वहीं दिनेश को पत्नी की कमी खलने लगी थी तो दिनेश ने मार्च माह में बिहार राज्य की रहने वाली संगीता जो पहले कैसरगंज थाना क्षेत्र के भट्टपुरवा में रहती थी। संपर्क होने पर वह 6 माह से कोदही गांव निवासी दिनेश के साथ रह रही थी।

पूर्व सांसद अफजाल अंसारी के अवैध कब्जे की पोखरी अतिक्रमणमुक्त

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मुहम्मदाबाद में पूर्व सांसद अफजाल अंसारी द्वारा पोखरी पर किए गए अवैध कब्जे को गुरुवार को पुलिस प्रशासन ने अतिक्रमण मुक्त कराया है। यह पोखरी मोहम्मदाबाद नगर पालिका क्षेत्र मैं स्थित है। पुलिस प्रशासन ने अवैध ढंग से कब्जा की गई इस पोखरी को मुक्त करा कर नगरपालिका का बोर्ड लगा दिया है। जिला प्रशासन द्वारा मोहम्मदाबाद नगर के अकटकीहा मोहल्ला स्थित पोखरी को कब्जा मुक्त कराया। इस मामले में पुलिस अधीक्षक ओमबीर सिंह ने बताया कि आईएस गैंग लीडर और उनके करीबियों के खिलाफ लगातार कार्यवाही जारी है।इसी क्रम में राजस्व विभाग और पुलिस विभाग की जो कार्रवाई चल रही थी उसमें वहां पर पोखरी पाई गई जिस पर पूर्व सांसद अफजाल अंसारी का कब्जा पाया गया। और संपत्ति को कब्जा मुक्त कराया गया, और उसे नगर पालिका मोहम्मदाबाद ने अपने कब्जे में ले लिया है। मौके पर उप जिलाधिकारी भारत भार्गव, क्षेत्राधिकारी हितेंद्र कृष्ण, प्रभारी निरीक्षक घनानंद त्रिपाठी, नगर पालिका परिषद मोहम्मदाबाद के अधिशासी अधिकारी विरेंद्र राव सहित भारी मात्रा में पुलिस फोर्स मौजूद रही।

एम्बुलेंस नहीं आई, युवक ने तोड़ा दम : खेत में तड़पता देख... सेल्समैन ने दी थी सूचना, अधिक शराब पीने से मौत की आशंका

फरुर्खाबाद। फरुर्खाबाद जिले के कायमगंज कोतवाली क्षेत्र में शराब ठेके के पीछे खेत में तड़प रहे युवक को देखकर ठेके के सेल्समैन ने पुलिस व एंबुलेंस को सूचना दी। युवक ने चंद मिनटों में सेल्समैन के सामने ही दम तोड़ दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके पर जाकर जांच पड़ताल की। परिजनों ने दो घंटे बाद कोतवाली जाकर उसकी शिनाख्त कर ली। शुक्रवार सुबह करीब 8 बजे रेलवे रोड स्थित एक शराब के ठेके के पीछे खेत में करीब 25 वर्षीय युवक तड़प रहा था। ठेके का सैल्समैन खेत की ओर शौच के लिए गया। उसने युवक को बेहोशी की हालत में तड़पते हुए देखा। उसने डायल 112 और एम्बुलेंस को सूचना दी। युवक ने एम्बुलेंस पहुंचने से पहले ही सेल्समैन के सामने तड़पते हुए दम तोड़ दिया। सूचना पर सीओ सोहराब आलम व इंस्पेक्टर संतोष कुमार अवस्थी, मंडी चौकी प्रभारी केके कश्यप मौके पर पहुंचे। पुलिस को शव के पास ही एक बैग मिला।

इसमें कपड़े आदि सामान रखा था। वहीं एक देशी शराब का पौआ व एक पानी का पाउच रखा था। इससे अनुमान लगाया गया कि युवक ने शराब पी थी। फोरेंसिक टीम भी पहुंच गई। टीम ने कुछ नमूने लेकर फोटोग्राफी की। पुलिस ने युवक के शव की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल की।

दो घंटे बाद गांव अजमतपुर निवासी युवक के पिता व परिवार के अन्य लोग कोतवाली पहुंचे। पिता रोशनलाल ने बताया कि मृतक उसका पुत्र कुलदीप है। एक सप्ताह पूर्व वह बाजार हेयर कटिंग दुकान का सामान लेने आया था। तब से घर नहीं लौटा। वह अपनी ननिहाल कोलकत्ता चला गया था। परिजनों की उससे बातचीत भी हुई थी। बुधवार को वह कोलकत्ता-आगरा एक्सप्रेस ट्रेन से घर के लिए चला। गुरुवार सुबह 11 बजे वह फरुर्खाबाद ट्रेन से उतरा। उसका मोबाइल स्विच ऑफ हो गया । शुक्रवार सुबह उसके शव मिलने की जानकारी मिली। कुलदीप के दो वर्ष की एक बच्ची है। पत्नी दयावती गर्भवती है। कुलदीप के पिता रोशनलाल ने बताया कि वह शराब पीने का आदी था। शव के पास एक पौआ भी मिला है। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि युवक ने ज्यादा शराब पी ली होगी। इससे उसकी हालत बिगड़ गई। उन्होंने कहा कि वह बिना बताए अपनी ननिहाल कोलकत्ता चला गया था। घर पर कोई ऐसा विवाद भी नहीं हुआ था।

बाथरूम में लटका मिला प्रिंसिपल का शव

कानपुर। कानपुर में सरकारी इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल सुकांत सरकार (57) ने अपने घर में फंदा लगाकर जान दे दी। सुबह बेटे को उनका शव बाथरूम के अंदर फंदे से लटका मिला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच पड़ताल शुरू की है। बताया जा रहा है कि मृतक शिक्षकों के कामकाज में कोई सहयोग न मिलने से आहत थे। कल्याणपुर के आनंदशील अपार्टमेंट निवासी सुकांत नवंबर 2022 में आयोग द्वारा प्रधानाचार्य पद पर चयनित होकर शिवराजपुर, बैरी के राम सहाय इंटर कॉलेज आए थे। उनके छोटे भाई सुदीप्तो ने पुलिस को बताया कि कॉलेज में प्रधानाचार्य की पोस्ट खाली थी। कॉलेज की एक प्रचार्या को कार्यवाहक प्रधानाचार्य मैनेजमेंट ने नियुक्त किया था। आरोप है कि सुकांत की तैनाती आयोग से कॉलेज में किए जाने के कारण प्रचार्या के हाथ से प्रधानाचार्य के सभी अधिकार छिन गए थे। इस कारण वो और उनके सहयोगी शिक्षक उनका कामकाज में बिल्कुल भी सहयोग नहीं करते थे।

कहा गुम होता जा रहा भाई चारा

लखीमपुर खीरी। एक समय था जब भाईचारे और अपने पड़ोसी अपने शहर व देश वासियों से प्यार करो के विचारों को चुनिंदा तरीके से व्यवहार में लाया जाता था और नफरत पर जीत हासिल की जाती थी लेकिन अब ना जाने क्या हुआ उस महोब्बत को। दूसरी तरफ देखा जाये तो हम नागरिकों के लिए कोई संकट नहीं है। गरीबी भुखमरी महंगाई बेरोजगारी समान अवसरों का न मिलना शिक्षा स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं हमें परेशान तो करती हैं लेकिन कोई बात नहीं गुजर-बसर हो जाती है। संगठन या नेतृत्व के अभाव में हमलोग एकजुट न भी हो पा रहे हों तो भी अपने अपने स्तर पर जिंदगी की गाड़ी अपनी चाल चलती रहती है। हम हर हाल में खुश रह सकते हैं अगर हमारी आपसी सद्भावनाएं बनी रहें। एक समय था जब हिंसा और नफरत की बातें सुनकर हम भयभीत हो जाते थे और तब अपनी अपनी प्रार्थनाओं का सहारा ले लेते थे। हमें इस बात का अहसास तो होता है कि हमारे आसपास बहुत सारी मुश्किलें हैं लेकिन बड़ी मुश्किल तब आती है जब मुश्किल की बात न हो रही हो। जब सच्चाई को समझने वाले लोग कम या कमजोर पड़ जाएं या फिर झूठ के साथ खड़े हुए दिखाई दें तो हम नागरिकों के लिए बस यही संकट है। बाकी सब ठीक है अभी भी व्यक्त हैं हमें संभलना होगा कहीं बहूत देर न हो जाए, महोब्बत ही नफरत को काट सकती है।

प्रदेश प्रवक्ता ने भाजपा सरकार की गिनाई उपलब्धियां

मितौली खीरी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश का गौरव बढ़ाया है। नौ साल के भाजपा शासनकाल में देश के गरीबो के उत्थान के लिए गरीब कल्याण योजनाओ का संचालन किया गया। जिनमे आवास योजना के तहत हर गरीब को रहने के लिए छत मुहैया कराई गई। गरीब महिलाओ के लिए उज्वला योजना के तहत गैस सिलेंडर उपलब्ध कराए जाने का कार्य किया गया। यह उदगार पूर्व सांसद एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता जुगल किशोर ने भारतीय जनता पार्टी के सेवा सुशासन एवं गरीब कल्याण के 9 वर्ष पूर्ण होने पर विकासखंड मितौली सभागार में आयोजित देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीसी कार्यक्रम के पूर्व जनता को संबोधित करते हुए कहा। पूर्व राज्यसभा सदस्य ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा गरीब कल्याण एवं सुशासन के क्रम में संचालित योजनाओं का बखान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित खंड विकास अधिकारी मितौली राकेश कुमार सिंह ने मुख्य अतिथि जुगल किशोर के कर कमलों से प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को चाबी वितरण /गृह प्रवेश के अंतर्गत चाबी भेंट की गई। इस अवसर पर भाजपा के पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं प्रदेश प्रवक्ता जुगल किशोर ने सेवा सुशासन एवं गरीब कल्याण के 9 वर्ष पूर्ण होने पर समस्त उपस्थित जनता को पत्रक भेंट किए। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी मितौली राकेश सिंह एवं सहायक विकास अधिकारी राजेश शुक्ल, मंडल अध्यक्ष मितौली सर्वेश सिंह, चंद्रिका सिंह, सुंदर सिंह, महाविद्यालय के प्रबंधक सहित समस्त भाजपा कार्यकर्ता लाभार्थी सम्मानित नागरिक मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

दिनेश यादव बने सपा के नगर अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष ने की सूची जारी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। शुक्रवार को समाजवादी पार्टी गाजीपुर के जिलाध्यक्ष गोपाल यादव ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के निदेर्शानुसार समाजवादी पार्टी के नगर अध्यक्षों की सूची जारी किया जिसके अनुसार इमरान खां उर्फ सद्दाम को नगरपालिका परिषद जमानियां का अध्यक्ष जबकि दिनेश यादव मुगलानी चक नगर पालिका परिषद गाजीपुर का अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। इसी प्रकार मो.आरिफ उर्फ बाबी चौधरी नगर पालिका परिषद गाजीपुर का नगर महासचिव, अख्तर हुसैन अंसारी को नगर अध्यक्ष नगरपंचायत बहादुरगंज, राम जी सोनकर को नगर अध्यक्ष नगर पंचायत सैदपुर, अरविन्द कन्नौजिया को नगर अध्यक्ष नगर पंचायत जंगीपुर की ज़िम्मेदारी दी गई है।

गैर समुदाय का युवक विवाहिता को लेकर हुआ फरार

प्रखर पिंडरा वाराणसी। फूलपुर थाना क्षेत्र के पिंडरा बाजार निवासी एक 32 वर्षीय विवाहिता को 22 वर्षीय मुस्लिम युवक प्रेम जाल में फंसा कर ले भागा। पीड़ित पति के मोबाइल पर फोन आने पर शुक्रवार को फूलपुर थाने पहुच कर तहरीर दी। बताते है कि तीन दिन पूर्व पिंडरा निवासी युवक के दुकान पर आने व उससे मित्रवत सम्बंध रखने वाला मुस्लिम युवक उसकी पत्नी को लेकर भाग निकला। गुरुवार को फोन कर पड़ाव निवासी शाकिब ने बताया कि उसके पत्नी व 6 वर्ष के बच्चे को ले भागा है और कहाकि वह उसके पत्नी व बच्चे को मुस्लिम बनाएगा। यदि कही शिकायत की तो इन दोनों को मार डालूंगा। फोन आने के बाद घर मे हड़कंप मच गया। यह बात शुक्रवार को जंगल मे आग की तरह फैली। उसके बाद हिन्दू संगठन के लोग भी आगे आये और इसे लव जिहाद का मामला बताते हुए पुलिस से मुकदमा दर्ज करने की मांग की। लेकिन पुलिस जांच के बाद कार्रवाई का आश्वासन देकर लौटा दिया। बताते हैं कि पड़ाव निवासी शाकिब पिंडरा बाजार में एक फर्नीचर के दुकान पर काम करता था और उक्त विवाहिता के पति से दोस्ती बढ़ाकर घर मे घुस गया और मौका पाते ही विवाहिता को ले भागा। जबकि विवाहिता की उम्र उससे 10 वर्ष अधिक बताई जाती है। वही हिन्दू जागरण मंच के गौरीश सिंह ने कहाकि यदि मुकदमा दर्ज नही हुआ तो संगठन के लोग सड़क पर उतरने के लिए बाध्य होंगे।

मवेशी संग दुष्कर्म करता था युवक, शर्मसार परिजन घर में कैद, सीसीटीवी में कैद हुई घटना, गिरफ्तार

कानपुर। कानपुर में गुजैनी क्षेत्र में मवेशियों के साथ दुष्कर्म करते युवक का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। बर्रा आठ सी ब्लॉक निवासी मयंक त्रिपाठी जानवरों के लिए काम करने वाली संस्था उम्मीद एक किरण के सदस्य हैं। मंयक के मुताबिक, करीब दस दिन पहले उनके मित्र ने मोहल्ले में रहने वाले अधेड़ बृजेश कुमार मिश्रा को देर रात एक जानवर के साथ दुष्कर्म करते देखा था। हालांकि साक्ष्य न होने पर किसी ने कुछ नहीं कहा। एक दिन एक और मवेशी के साथ दुष्कर्म करते दिखा। इसका उन्होंने मोबाइल फोन से वीडियो बना लिया। इधर बुधवार रात एक पार्क में एक मवेशी बैठा था। तभी बृजेश आया और उसके साथ भी दुष्कर्म करने लगा। यह घटना एक सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। संस्था के सदस्यों ने गुरुवार देर रात थाने पहुंच कर तहरीर दी। इस पर पुलिस ने शुक्रवार को उसको घर से दबोच लिया। गुजैनी थाना प्रभारी पवन कुमार ने बताया कि मयंक त्रिपाठी की तहरीर पर बृजेश के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर गिरफ्तार किया गया। आरोपी पहले सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी करता था। अब घर में ही रहता है। बृजेश की इस हरकत के बाद शर्मसार परिजन घर में ही कैद हो गए है। वहीं, बृजेश मिश्रा के जानवरों से कुकर्म करने की सूचना से इलाके में हड़कंप मच गया। पुलिस ने आरोपित को शुक्रवार को घर से दबोच लिया। उसकी गिरफ्तारी क बाद परिजन थाने भी नहीं पहुंचे।

संदिग्ध हालात में विवाहिता की मौत, पति बोला- गर्भपात की दवा खाने से गई जान, भाई ने जताया वजह पर संदेह

हरदोई। हरदोई जिले में माधौगंज थाना क्षेत्र के देविनपुरवा में संदिग्ध हालात में विवाहिता की मौत हो गई। पति का कहना है कि गर्भ गिराने की दवा खाने के बाद मौत हुई, जबकि मृतका का भाई पूरे मामले पर संदेह जता रहा है। पुलिस ने शव को कब्जे में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। देविनपुरवा निवासी योगेंद्र मजदूरी करता है। पांच साल पहले उसकी दूसरी शादी किरन (२७) निवासी बनहेटा कोतवाली देहात सीतापुर के साथ हुई थी। पहली पत्नी से योगेंद्र के चार और दूसरी पत्नी से दो बेटियां हैं। पहली पत्नी की मौत होने के बाद उसने किरन से शादी की थी। योगेंद्र के मुताबिक शुक्रवार सुबह बच्ची को स्कूल छोड़कर घर पहुंचने पर किरन बेसुध पड़ी मिली। पूछने पर उसने बताया कि गर्भ गिराने की दवा खाई थी और उसी के बाद हालत बिगड़ गई। योगेंद्र का दावा है कि वह इलाज के लिए कछौना के एक प्राइवेट अस्पताल गया था, लेकिन किरन की मौत हो गई। घटना की जानकारी पर किरन का भाई पंकज मौके पर पहुंचा और मौत की वजह पर संदेह जताया। पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर पोस्टमार्टम कराने की मांग की। जानकारी पर सीओ सतेंद्र सिंह, प्रभारी निरीक्षक ध्रुव कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

किशोरी पर निकाह और धर्मांतरण के लिए बनाया दबाव, मां बोली- शातिर किस्म के हैं आरोपी, सात पर रिपोर्ट

कन्नौज। कन्नौज जिले के छिबरामऊ कोतवाली क्षेत्र में समुदाय विशेष के युवक की ओर से किशोरी पर निकाह करने व मतांतरण करने का दबाव बनाने के मामले में पुलिस ने चार महिलाओं समेत सात के खिलाफ संगीन धाराओं में मामला दर्ज किया है। अब पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है। पीड़ित महिला ने बताया कि उसके पति की मौत हो चुकी है। उसके दो बेटे व तीन बेटियां हैं। उसकी बड़ी बेटी 15 साल की है। उसके मोहल्ले के ही पप्पू इकबाल पुत्र सिकंदर, शाहरूख, दिलशाद पुत्र नौशाद, नगमा पत्नी दिलशाद, शादाब पुत्र नौशाद, सकीना पत्नी शादाब, रुकसार पत्नी शाहरूख दबंग व शातिर किस्म के व्यक्ति हैं। पप्पू इकबाल आए दिन उसके व उसकी बेटी के साथ छेड़छाड़ करता है और बेटी पर निकाह करने व धर्मांतरण कर मुस्लिम धर्म अपनाने का दबाव डालता रहता है। पांच जून की देर शाम आरोपी अवैध असलाह लेकर उसके घर में घुस आए और बेटी के साथ छेड़छाड़ कर उस पर हमलावर हो गए।

पुलिस अधीक्षक खीरी ने नवनिर्मित थाना पढुआ का किया लोकार्पण

लखीमपुर खीरी। आज दिनांक 07 जुलाई 2023 को पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा द्वारा विधि विधान से पूजन करके नवनिर्मित थाना पढुआ का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी निघासन, सर्किल के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष, अन्य पुलिस अधिकारी/कर्मचारीगण, क्षेत्र के संभ्रांत व्यक्ति तथा भारी संख्या में स्थानीय जनता उपस्थित रही। लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा अपने उद्बोधन के माध्यम से समस्त क्षेत्रीय संभ्रान्त व्यक्तियों एवं स्थानीय जनता को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद व्यक्त किया गया तथा यह अपेक्षा की गई कि नवनिर्मित थाना पढुआ में आने वाले समय में अपनी सार्थकता को सिद्ध करेगी तथा संपूर्ण क्षेत्र में अपराध पर नियंत्रण स्थापित होगा।

जानें कैसे

जलवायु परिवर्तन

पशु जगत में संचार व्यवस्था को कर रहा है बाधित

- पानी में सीओ2 का स्तर बढ़ने के कारण जल पिस्सू डफनिया को शिकारियों से बचना कठिन हो रहा है और प्रवाल भित्तियों में, रंगीन और सुंदर डमसेलफिश यह जानने की क्षमता खो रहे हैं कि उनके शिकारी कौन हैं,यह सब संभवतः जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ है

प्लाइमाउथ (यूके) (द कन्वरसेशन)। चींटियों की कुछ प्रजातियों को पथों का अनुसरण करने में मुश्किलें पेश आ रही हैं, क्योंकि तापमान बढ़ने से एक निश्चित फेरोमोन उत्पन्न हो रहा है जो उनकी संचार व्यवस्था को बाधित कर रहा है। पानी में सीओ2 का स्तर बढ़ने के कारण जल पिस्सू डफनिया को शिकारियों से बचना कठिन हो रहा है। और प्रवाल भित्तियों में, रंगीन और सुंदर डमसेलफिश यह जानने की क्षमता खो रहे हैं कि उनके शिकारी कौन हैं। यह सब किसी न किसी तरह से संभवतः सबसे बड़े परिवर्तन के कारण हुआ है जो है जलवायु परिवर्तन।

मेरे सहयोगियों और मैंने एक ऐसा अनुसंधान किया है जिससे पता चला है कि जलवायु परिवर्तन समुद्री, मीठे पानी और भूमि-आधारित प्रजातियों में रासायनिक संचार को भी बदल रहा है, जिसका हमारे ग्रह के भविष्य और मानव कल्याण पर दूरगामी प्रभाव पड़ रहा है। रासायनिक संचार अच्छी तरह से कार्यशील पारिस्थितिकी तंत्र में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। यह 'जीवन की भाषा' जीवों के बीच बातचीत को नियंत्रित करती है और पर्यावरण और अंततः, पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए आवश्यक है। तथाकथित 'इन्फोकेमिकल्स' के माध्यम से संचार शायद ग्रह पर संचार का सबसे पुराना और सबसे व्यापक रूप है। इन्फोकेमिकल्स, भूमि और जल दोनों में, जीवन के वृक्ष में अधिकांश पारिस्थितिक प्रक्रियाओं के लिए आधार प्रदान करते

हैं, जो कि जीवों की सतह पर मौजूद संकेतों के रूप में कार्य करते हैं या आसपास के वातावरण में जारी किए जाते हैं। वे संतुलन बनाए रखकर प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में भी मदद करते हैं और ऐसा करते हुए, भोजन और स्वच्छ पानी सहित कई चीजों के प्रावधान का समर्थन करते हैं जो मनुष्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्फोकेमिकल्स कार्यों और व्यवहार की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रभावित करते हैं जैसे शिकारी और शिकार के बीच संबंध।

सूचना रसायन बदलना

जलवायु परिवर्तन फेरोमोन जैसे इन जानकारी ले जाने वाले रसायनों के उत्पादन को बदल रहा है। इसका विभिन्न प्रकार की प्रजातियों पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है। वैज्ञानिक अनुसंधान से पता चला है कि तापमान, कार्बन डाइऑक्साइड और पीएच स्तर में परिवर्तन मूलभूत प्रक्रियाओं के हर एक पहलू को प्रभावित कर सकते हैं जो जीव एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए उपयोग करते हैं। इसका एक उदाहरण एक प्रयोगशाला प्रयोग है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे जलवायु परिवर्तन ने संभावित शिकारियों के प्रति उनकी चिंता को कम करके कुछ मछली प्रजातियों में शिकारी-विरोधी व्यवहार में कमी ला दी है।

कई मछलियां कुछ रसायन तब छोड़ती हैं जब उन्हें किसी शिकारी द्वारा नुकसान पहुंचाया जाता है या अन्यथा वे खतरे में होती हैं। और उनकी साथी मछलियां गंध के माध्यम से पता चलने वाले इन रसायनों की उपस्थिति को चेतावनी के रूप में उपयोग करती हैं। लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया कि जब पानी में अधिक सीओ2 अवशोषित हो जाती है और पीएच स्तर कम हो जाता है, तो सबसे अधिक शोधित अलार्म क्यू (हाइपोक्सैन्थिन-3-एन-ऑक्साइड) अपरिवर्तनीय रूप से बदल जाता है और मछली को इसका पता लगाना कठिन हो जाता है। जलवायु परिवर्तन केवल व्यक्तिगत प्रजातियों को ही प्रभावित नहीं कर रहा है। अध्ययनों की बढ़ती संख्या से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन से जुड़े तनाव कारक जो इन रासायनिक अंतःक्रियाओं को संशोधित करते हैं, पूरे पारिस्थितिकी तंत्र में सूचना-विघटन पैदा कर रहे हैं। हालांकि, अंतर्निहित तंत्रों के बारे में हमारी समझ दुर्लभ बनी हुई है। अगले कदम के रूप में, सहकर्मी और मैं इस पर काम कर रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन रोग पैदा करने वाले रोगजनकों और उन्हें आश्रय देने वाले जानवरों के बीच रासायनिक रूप से मध्यस्थता वाले रिश्ते (या संचार) को कैसे प्रभावित कर सकता है।

सूचना रसायन

उदाहरण के लिए, शार्क इन रसायनों का उपयोग आश्चर्यजनक दूरी पर अपने शिकार को 'सूंघने' के लिए करती हैं। ध्यान रखें कि कोई भी रसायन जिसे आप सूंघ सकते हैं वह संभवतः एक सूचना रसायन है, जो अक्सर एक अलग प्रजाति के लिए होता है। उदाहरण के लिए, चीड़ के जंगल की गंध - यानी, कुछ रसायनों की उपस्थिति - एक इंसान, भालू या चींटी को कुछ अलग संकेत देती है। ये रसायन चारा खोजने और खिलाने को भी प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, परागणकों को आकर्षित करने के लिए कुछ पौधों की प्रजातियों द्वारा सूचना रसायन जारी किए जाते हैं, लेकिन जो नुकसान पहुंचा सकते हैं उन्हें दूर कर देते हैं। कुछ मामलों में, हमले का सामना कर रहा पौधा अपने आसपास के पौधों को आसन्न विनाश के बारे में भी बता सकता है ताकि वे तदनुसार प्रतिक्रिया दे सकें। सूचना रसायन आवास चयन को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बार्नकल लार्वा किस प्रकार जुड़ने के लिए उपयुक्त सतह का चयन करते हैं। और इन्फोकेमिकल्स का उपयोग प्रजातियों द्वारा संभावित साथियों को पहचानने और प्रजनन की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ चमगादड़ प्रजातियां सबसे बड़ी आनुवंशिक विविधता वाले साथी को 'सूंघ' सकती हैं।

50 करोड़ की कमाई की

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन और अभिनेत्री कियारा आडवाणी की फिल्म 'सत्यप्रेम की कथा' ने 50 करोड़ की कमाई कर ली है। 'सत्यप्रेम की कथा' 29 जून को सिनेमाघरो में प्रदर्शित हुई है। इस फिल्म को समीर विद्वंस ने निर्देशित किया है। फिल्म 'सत्यप्रेम की कथा' में कियारा एक बार फिर 'भूल भुलैया 2' को-स्टार कार्तिक आर्यन के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आई। दर्शकों को कार्तिक और कियारा की जोड़ी पसंद आई है। सत्य प्रेम की कथा ने बॉक्स ऑफिस पर 50 करोड़ की कमाई कर ली है।

शेखर कपूर को मिला ब्रिटिश नेशनल अवॉर्ड

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के जानेमाने निर्देशक शेखर कपूर को फिल्म व्हॉट्स लव गॉट टु डू विद इट के लिए ब्रिटिश नेशनल अवॉर्ड मिला है। व्हॉट्स लव गॉट टु डू विद इट के लिए शेखर कपूर को बेस्ट डायरेक्टर का ब्रिटिश नेशनल अवॉर्ड प्रदान किया गया है। अवॉर्ड समारोह में फिल्म को नौ श्रेणियों में नॉमिनेट किया गया था, जिनमें से फिल्म ने चार अवॉर्ड अपने नाम किए हैं। बेस्ट डायरेक्टर के अलावा बेस्ट ब्रिटिश फिल्म, बेस्ट स्क्रीनप्ले और बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर का अवॉर्ड भी फिल्म को मिला। शेखर कपूर ने इस बात की जानकारी सोशल मीडिया पर दी। उन्होंने लिखा, शुक्रिया ब्रिटिश नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स। यह एकदम अनपेक्षित सम्मान है। लेकिन, सही मायनों में यह पुरस्कार व्हॉट्स लव टीम का है। कोई भी निर्देशक इस टीम को जोड़कर ही बनता है। व्हॉट्स लव गॉट टु डू विद इट ब्रिटिश रोमांटिक कॉमेडी है, जो ब्रिटेन के साथ अमेरिका और भारत में रिलीज हुई थी। लिली जेम्स शाजाद लतीफ, शबाना आजमी, एमा थॉम्पसन, सजल अली, ओलिवर क्रिस और आसिम चौधरी ने इस फिल्म में प्रमुख किरदार निभाए।

वेबसीरीज मेड इन हेवन के सीजन-2 का पोस्टर रिलीज

मुंबई (वार्ता)। फिल्मकार जोया अख्तर और रीमा कागती की वेब सीरीज 'मेड इन हेवन' के सीजन-2 का पोस्टर रिलीज हो गया है। वर्ष 2019 में रिलीज वेब सीरीज 'मेड इन हेवन' दर्शकों को बेहद पसंद आई थी। अब इसके दूसरे सीजन की भी घोषणा हो गई है। ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो ने दूसरे सीजन की घोषणा करने के साथ ही फस्ट पोस्टर भी रिलीज किया है। एक्सेल मीडिया एंड एंटरटेनमेंट और टाइगर बेबी के बैनर तले बन रही मेड इन हेवन के सीजन-2 की कहानी दो वेडिंग प्लानर, करण और तारा के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। वो एक इंडियन वेडिंग प्लानर हैं, लेकिन इसके साथ ही दोनों की जिंदगी में भी कई उतार-चढ़ाव आते हैं। 'मेड इन हेवन 2' में एक बार फिर दर्शकों को शोभिता धुलिपाला, अर्जुन माथुर, कल्कि केकला, शशांक अरोड़ा, शिवानी रघुवंशी और जिम सरभ प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे।

'बकवास' सिनेमा' को बढ़ावा देना बिग टैलेंट : विवेक अग्निहोत्री

मुंबई(आईएएनएस)। फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री ने अपनी आगामी फिल्म 'द वैक्सीन वॉर' को लेकर बात की। अग्निहोत्री ने कहा कि फिल्मों को ग्लैमराइज करना और अत्यधिक हिंसा दिखाना बकवास सिनेमा को बढ़ावा दे रहा है, लेकिन अब यह एक बड़ी प्रतिभा मानी जाती है। फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री ने ट्विटर पर एक संदेश दिया जिसमें उन्होंने लिखा कि थ्लोग हिंसक पैदा नहीं होते हैं, ग्लैमराइज सिनेमा जगत हिंसा दिखाकर बच्चों का दिमाग खराब कर रहा है। जिन्हें वास्तव में युवाओं को शांति के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा, अब सिनेमा को ग्लैमराइज करना और उसमें हिंसा दिखाना प्रतिभा माना जाने लगा है। बकवास सिनेमा को प्रमोट करना भी बड़ा टैलेंट है।

धनुष ने डी50 की शूटिंग शुरू की

मुंबई (वार्ता)। दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार धनुष ने अपनी आने वाली फिल्म डी50 की शूटिंग शुरू कर दी है। धनुष ने हाल ही में अपनी दूसरी डायरेक्टोरियल फिल्म डी50 की घोषणा की थी। सन पिक्चर्स ने फिल्म डी50 से धनुष का पहला पोस्टर रिलीज करते हुए बताया कि इस फिल्म शूटिंग शुरू हो चुकी है। इस पोस्टर में धनुष अब तक के सबसे अलग लुक में नजर आ रही हैं।

पोस्टर में धनुष क्लीन शेव हेड के साथ नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर में बैकग्राउंड में फैक्ट्री दिखाई गई हैं, जिसमें आसमान तक लाल रंग के निशान हैं। इस पोस्टर को शेयर करते हुए धनुष ने कैप्शन में लिखा, शूट शुरू हो चुका है, ओम नमः शिवाय। धनुष फिल्म डी50 में सिर्फ अभिनय ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि वह फिल्म में निर्देशन की कुर्सी भी संभालते हुए नजर आएंगे। इस पोस्टर के साथ ही धनुष ने बताया कि उनकी फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है।

सीरीज 'कोहरा' 15 जुलाई से नेटफ्लिक्स पर होगी प्रसारित

मुंबई (भाषा)। नेटफ्लिक्स की नई सीरीज 'कोहरा' 15 जुलाई से मंच पर प्रसारित की जाएगी। ओटीटी मंच ने बृहस्पतिवार को यह घोषणा की। इसका निर्माण सुदीप शर्मा, गुंजीत चोपड़ा और दिग्गी सिसोदिया ने मिलकर किया है। इसके निर्देशक रणदीप झा हैं। सीरीज 'कोहरा' में सुविंदर विक्की, बरुन सोबती, वरुण बडोला, हरलीन सेठी, रैचेल शैली और मनीष चौधरी जैसे कलाकार भी नजर आएंगे।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह एक एनआरआई व्यक्ति की कहानी है जिसकी शादी से पहले हत्या कर दी जाती है। उसकी हत्या की गुत्थी सुलझाते समय कई रहस्य उजागर होते हैं और ऐसे परिवारों के राज सामने आते हैं जिनमें कई मुद्दों को लेकर टकराव है। 'ओवर द टॉप' (ओटीटी) मंच पर इंटरनेट के माध्यम से फिल्म व अन्य डिजिटल सामग्री (कंटेंट) उपलब्ध कराई जाती है।

करण जौहर ने रणवीर सिंह को जन्मदिन की बधाई दी

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड फिल्मकार करण जौहर ने रणवीर सिंह को उनके जन्मदिन पर बधाई दी है। रणवीर सिंह आज अपना 38वां बर्थडे मना रहे हैं। रणवीर सिंह के जन्मदिन के अवसर पर उनके फैंस उन्हें सोशल मीडिया पर बधाई दे रहे हैं। रणवीर सिंह के बर्थडे पर फिल्म-निर्माता करण जौहर सोशल मीडिया पर प्यारी तस्वीरें शेयर कर उन्हें बधाई दी है। करण जौहर ने अपनी अपकमिंग फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लीड स्टार रणवीर सिंह को उनके बर्थडे पर बेहद क्यूट अंदाज में विश किया है।

बेटी के साथ सुकून के पल बिता रही सुष्मिता सेन

मुंबई (आईएएनएस)। इन दिनों अभिनेत्री सुष्मिता सेन पेरिस में सुकून के पल बिता रही हैं। उन्होंने अपनी छोटी बेटी अलीसा के साथ छुट्टियों की एक झलक सोशल मीडिया पर पोस्ट की है। यूरोप में छुट्टियां मना रही सुष्मिता ने अपनी बेटी अलीसा के साथ एक मनमोहक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें दोनों एफिल टॉवर के सामने डांस करते नजर आ रहे है। पोस्ट किए गए वीडियो में अलीसा पहले शर्मीली लग रही थी, लेकिन जब उसकी मां सुष्मिता क्लिप में उसके साथ आई तो सब ठीक हो गया। सुष्मिता ने कैप्शन में बताया कि अलीसा अब आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जा रही है। सुष्मिता ने लिखा, जादुई अलीसा। विदेश में पढ़ाई के लिए जाने से पहले मेरी शोना की पेरिस की पहली यात्रा, समय कैसे बीत जाता है, मैं हमारे नृत्य को हमेशा संजो कर रखूंगी। सुष्मिता दो बच्चों की मां हैं। उन्होंने 23 साल की रेनी सेन और 13 साल की अलीसा सेन को गोद लिया था। फॉर्मर मिस यूनिवर्स सुष्मिता अगली बार 'आर्या' के नए सीजन और 'ताली' में दिखाई देंगी, जहां वह ट्रांसजेंडर श्रीगौरी सावंत की भूमिका निभाएंगी।

तू तू मैं मैं का गाना 'पतरे कमरिया हो' रिलीज

मुंबई (वार्ता)। भोजपुरी सिनेमा के जानेमाने अभिनेता रितेश पांडे की आने वाली फिल्म 'तू तू मैं मैं' का रोमांटिक गाना 'पतरे कमरिया हो' म्यूजिक कंपनी वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स भोजपुरी के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल पर रिलीज हो गया है। 'पतरे कमरिया हो' गाने में रितेश पांडे और मधु शर्मा रोमांटिक मूड में नजर आ रहे हैं। गाना गाते रितेश पांडे कहते हैं कि 'कारी कारी अंखिया में करियइ कजरवा, ओठ लागे मधु के गगरिया हो पतरे पातर पिया धरी न पजरिया पतरे कमरिया हो इस गाने को रितेश पांडे और अलका झा ने गाया है। इस गीत को लिखा है सुमित सिंह चंद्रवंशी ने, जिसे संगीत दिया है संगीतकार छोटे बाबा ने।

गौरतलब है कि रितेश पांडे, यामिनी सिंह, मधु शर्मा, विक्रांत सिंह स्टारिंग हॉरर कॉमेडी भोजपुरी फिल्म 'तू तू मैं मैं' का ट्रेलर पहले ही वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स भोजपुरी के यूट्यूब चैनल पर पहले ही रिलीज किया जा चुका है। यह फिल्म जिओ सिनेमा पर 15 जुलाई से स्ट्रीमिंग की जाएगी।

काजोल ने माधुरी दीक्षित की तारीफ की

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री काजोल ने माधुरी दीक्षित की तारीफ की है। काजोल ने कभी भी माधुरी दीक्षित के साथ काम नहीं किया है। काजोल से एक इंटरव्यू में पूछा गया कि एक ऐसी अंडररेटेड एक्टर का नाम बताइए, जिन्हें उतने रोल नहीं मिले, जितने मिलने चाहिए थे। इस पर काजोल ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, माधुरी दीक्षित का नाम लिया है। काजोल को लगता है कि माधुरी दीक्षित को जितने वैरायटी वाले रोल्स मिलने चाहिए थे, उतने नहीं मिले हैं।

जून में वाहनों की कुल खुदरा बिक्री 10 फीसद बढ़ी

■ यात्री वाहनों की बिक्री में पांच फीसद वृद्धि ■ दुपहिया वाहनों की बिक्री सात फीसद बढ़ी

नई दिल्ली (भाषा)।

घरेलू बाजार में वाहनों की कुल खुदरा बिक्री जून में 10 प्रतिशत बढ़ी है। इनमें यात्री वाहन और दुपहिया शामिल हैं। वाहन डीलर संघों के महासंघ (फाडा) ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

पिछले महीने वाहनों की कुल खुदरा बिक्री एक साल पहले की समान अवधि के 17,01,105 इकाई के आंकड़े से बढ़कर 18,63,868 इकाई हो गई। जून में यात्री वाहनों की खुदरा बिक्री पांच प्रतिशत बढ़कर 2,95,299 इकाई पर पहुंच गई। जून, 2022 में घरेलू बाजार में 2,81,811 यात्री वाहन बेचे गए थे। इसी तरह, पिछले महीने दुपहिया वाहनों की बिक्री सात प्रतिशत बढ़कर 13,10,186 इकाई पर पहुंच गई। एक साल पहले समान महीने में 12,27,149 दोपहिया बिके थे।

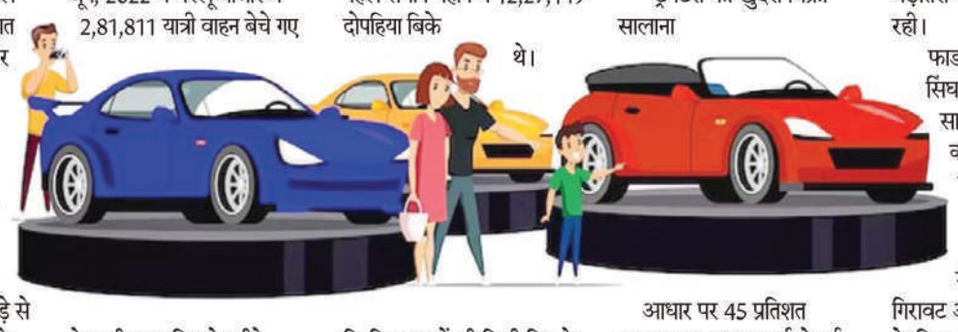

तिपहिया वाहनों की बिक्री पिछले साल जून के 49,299 इकाई के आंकड़े से 75 प्रतिशत बढ़कर 86,511 इकाई हो गई।

ट्रैक्टरों की खुदरा बिक्री सालाना आधार पर 45 प्रतिशत बढ़कर 98,660 इकाई हो गई, जबकि वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री जून, 2022 के 72,894 इकाई के आंकड़े से मामूली बढ़ोतरी के साथ 73,212 इकाई रही।

फाडा के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने कहा कि सालाना आधार पर वाहनों की खुदरा बिक्री 10 प्रतिशत बढ़ी है। वहीं दूसरी ओर माह-दर-माह आधार पर बिक्री में आठ प्रतिशत की गिरावट आई है। यह थोड़े समय के लिए वाहन बाजार में नरमी का इशारा करता है।

पीएफसी ने एचपीसीएल की राजस्थान रिफाइनरी को वित्त उपलब्ध कराया

नई दिल्ली (भाषा)।

पावर फाइनेंस कारपोरेशन (पीएफसी) ने एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी को 9187 करोड़ का वित्त प्रदान किया है। पीएफसी ने बृहस्पतिवार को बयान में यह जानकारी दी।

यह पहली परियोजना है जबकि पीएफसी ने रिफाइनरी और पेट्रोरसायन क्षेत्र को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है। पीएफसी न सिर्फ बिजली बल्कि बुनियादी ढांचा क्षेत्र के जरिए भी राष्ट्र निर्माण में सहयोग दे रही है। महारत्न कंपनी और बिजली क्षेत्र में देश की प्रमुख एनबीएफसी पीएफसी ने एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी को बाड़मेर स्थित 90 लाख टन सालाना क्षमता के रिफाइनरी एवं पेट्रोरसायन परिसर के लिए 9,187 करोड़ रुपए उपलब्ध कराए हैं।

बीएसई की सूचीबद्ध कंपनियों का एकाकैप नए रिकार्ड स्तर पर

■ 301 लाख करोड़ रुपए के स्तर पर पहुंचा

नई दिल्ली (भाषा)।

बीएसई की सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) बृहस्पतिवार को सुबह के कारोबार में 301.10 लाख करोड़ रुपए के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गया। स्थानीय शेयर बाजारों में सकारात्मक रुख के बीच बाजार पूंजीकरण नई ऊंचाई पर पहुंचा है। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 185.37 अंक या 0.28 प्रतिशत की बढ़त के साथ 65,631.41 अंक पर था। शेयर बाजार में तेजी के बीच बीएसई की सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण अपने सर्वकालिक उच्चस्तर 30110,526.12 करोड़ रुपए पर पहुंच गया।

बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 26 जून से चार जुलाई के दौरान रिकॉर्ड तेजी के बीच 2,500 से अधिक अंक चढा था।

संक्षिप्त खबरें

ऑडी की E-SUV अगस्त में

नई दिल्ली। जर्मनी की लक्जरी कार विनिर्माता ऑडी अपने इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) क्यू8 ई-ट्रॉन को अगले महीने भारतीय बाजार में उतारेगी। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लन ने बताया, 'कंपनी अपनी क्यू8 ई-ट्रॉन को 114 किलोवाट बैटरी के साथ 18 अगस्त को पेश करेगी। कंपनी की मौजूदा ई-ट्रॉन में 95 किलोवाट बैटरी का उपयोग होता है।(एजेंसी)

एक्सिस का नया म्यूचुअल फंड

लखनऊ (वि.)। भारत में सबसे तेजी से बढ़ते फंड हाउसों में से एक एक्सिस म्यूचुअल फंड ने अपने नए फंड आफर एक्सिस निफ्टी आईटी इंडेक्स फंड के लांच की घोषणा की है। यह निफ्टी आईटी टीआरआई पर नज़र रखने वाला एक ओपन-एंडेड इंडेक्स फंड है। यह जानकारी देते हुए कंपनी के फंड मैनेजर हितेश दास ने बताया कि एक्सिस निफ्टी आईटी इंडेक्स फंड निफ्टी आईटी टीआरआई को ट्रैक करेगा। न्यूनतम निवेश राशि 5,000 रुपए और उसके बाद 1/- रुपए के गुणकों में किया जा सकेगा।

जियो भारत अब पूर्वी उप्र में

लखनऊ (वि.)। 2जी मुक्त भारत के विज़न को साकार करने की दिशा में जियो ने हाल ही में जियो भारत फ़ोन को लांच करने की घोषणा की। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए जियो भारत फ़ोन अब पूर्वी उत्तर प्रदेश के बाज़ारों में भी उपलब्ध हो गया है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के लगभग 3 करोड़ 2जी ग्राहकों को 4जी से जोड़ने के लिए बेहद किफायती दामों पर जियो भारत 4जी फ़ोन की सौगात दी जा रही है। जियो भारत फ़ोन अब पूर्वी उत्तर प्रदेश के सभी छोटे-बड़े शहरों में उपलब्ध हो गया है। प्रथम चरण में, उपभोक्ता इन शहरों की 22000 से अधिक दुकानों और रिलायंस व जियो के 708 स्टोर्स से जियो भारत फ़ोन खरीद सकते हैं।

वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट

टिकाऊ वृद्धि की राह पर है भारत

■ अन्य देशों की तुलना में तेज है वृद्धि की रफ्तार

नई दिल्ली (भाषा)।

वैश्विक चुनौतियों के बीच बेहतर तरीके से वृहद आर्थिक प्रबंधन की वजह से आज भारत अन्य देशों की तुलना में अधिक तेजी से टिकाऊ वृद्धि की राह पर है। वित्त मंत्रालय की बृहस्पतिवार को जारी एक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला गया है।

वित्त मंत्रालय की मई के लिए मासिक आर्थिक समीक्षा और 2023 की वार्षिक समीक्षा रिपोर्ट में कहा गया है कि आपूर्ति-पक्ष अवसंरचना में निवेश ने पिछले कई दशकों की तुलना में अधिक लंबी अवधि के लिए भारत की सतत आर्थिक वृद्धि की संभावना को बढ़ा दिया है। रिपोर्ट कहती है कि भारत अपनी वृद्धि को पूर्व की तुलना में अधिक टिकाऊ तरीके से बरकरार रखने की स्थिति में है। अगर हम धैर्य रखें, तो और तेजी से आगे बढ़ पाएंगे।'

रिपोर्ट कहती है कि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय बैंकिंग और गैर-वित्तीय कारपोरेट क्षेत्रों में चुनौतियों के बीच वृहद आर्थिक प्रबंधन शानदार रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2022-23 में आर्थिक वृद्धि के रास्ते में एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण तत्व केंद्र सरकार का राजकोषीय रुख था। इसके चलते बीते वित्त वर्ष में सरकार का राजकोषीय घाटा 2021-22 की तुलना में कम रहा है।

रिपोर्ट में दिये गए अहम सुझाव

- महंगाई का दबाव कम करने के लिए शुल्कों में कमी कर सकती है सरकार
- कल्याणकारी योजनाओं पर अपने खर्च में कर सकती है इजाफा
- पूंजीगत खर्च में की गई वृद्धि को आगे भी रख सकती है बरकरार

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि सरकार मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने के लिए शुल्कों में कटौती कर सकती है और कल्याण पर खर्च बढ़ा सकती है। इसमें कहा गया है कि इसके अलावा सरकार अपने पूंजीगत व्यय के बढ़े प्रावधान को कायम रख सकती है। रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि की जो रफ्तार बीते वित्त वर्ष में शुरू हुई है, वह 2023-24 में भी जारी है। तमाम आंकड़े इसकी ओर इशारा करते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया कि शहरी मांग मजबूत है। वाहन बिक्री आंकड़ों, ईंधन खपत और यूपीआई लेनदेन से इसका पता चलता है। साथ ही दोपहिया और तिपहिया की मजबूत बिक्री के साथ ग्रामीण मांग भी सुधार की राह पर है।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड में चार नए सदस्य नियुक्त

नई दिल्ली (भाषा)।

आयकर विभाग के अंतर्गत भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के चार अधिकारियों को केंद्रीय वित्त मंत्रालय के तहत आने वाले केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) का सदस्य नियुक्त किया गया है। एक सरकारी आदेश में यह जानकारी दी गई। सीबीडीटी आयकर विभाग की प्रशासनिक इकाई है और इसका काम व्यक्तिगत आयकर और कारपोरेट कर जैसी कर की विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत राजस्व इकट्ठा करना है।

मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति की ओर से जारी आदेश के अनुसार, 1987 बैच के दो आईआरएस अधिकारी प्रवीन कुमार और हरिंदर बीर सिंह गिल और 1988 बैच के दो अधिकारी संजय कुमार वर्मा और रवि अग्रवाल को सीबीडीटी के सदस्य के तौर पर नियुक्त किया गया है। कर विभाग में विभिन्न क्षेत्रों में तैनात ये अधिकारी सीबीडीटी में चार पदों पर आएंगे, जो सितम्बर, 2021 से रिक्त हैं। सीबीडीटी में चेयरमैन के अलावा विशेष सचिव स्तर के छह सदस्य भी होते हैं।

सीबीडीटी में पहले से ही कार्यरत सदस्यों में 1987 बैच की आईआरएस अधिकारी- प्रज्ञा सहाय सक्सेना और सुभाश्री अनंतकृष्णन हैं। सीबीडीटी के चेयरमैन 1986 बैच के आईआरएस अधिकारी नितिन गुप्ता हैं।

नए शिखर पर सेंसेक्स

■ कारोबार की समाप्ति पर 340 अंक चढ़कर 65786 पर हुआ बंद

मुंबई (भाषा)।

घरेलू शेयर बाजार में एक दिन के विराम के बाद बृहस्पतिवार को फिर तेजी लौटी और बीएसई सेंसेक्स 340 अंक की छलांग के साथ नए शिखर पर पहुंच गया। विदेशी संस्थागत निवेशकों का पूंजी प्रवाह जारी रहने और सूचकांक में मजबूत हिस्सेदारी रखने वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर में लिवाली से बाजार को समर्थन मिला।

तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 339.60 अंक यानी 0.52 प्रतिशत की बढ़त के साथ अब तक के उच्चतम स्तर 65,785.64 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, मानक सूचकांक 386.94 अंक की तेजी के साथ 65,832.98 अंक के रिकार्ड स्तर तक पहुंच गया था। नेशनल स्टाक एक्सचेंज का निफ्टी भी 98.80 अंक यानी 0.51 प्रतिशत की बढ़त के साथ 19,497.30 की नई ऊंचाई पर पहुंच गया। कारोबार के दौरान यह 113.7 अंक उछलकर रिकार्ड 19,512.20 अंक तक चला गया था। सेंसेक्स के शेयरों में महिंद्रा एंड महिंद्रा लगभग पांच प्रतिशत मजबूत होकर सर्वाधिक लाभ में रहा। इसके अलावा पावर ग्रिड, टाटा मोटर्स, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एनटीपीसी, एक्सिस बैंक, नेस्ले, कोटक महिंद्रा बैंक, एशियन पेंट्स और विप्रो प्रमुख रूप से लाभ में रहे। दूसरी तरफ नुकसान में रहने वाले शेयरों में मारुति, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, बजाज फाइनेंस, इंडसइंड बैंक, इन्फोसिस और टाटा स्टील शामिल हैं।

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की लिवाली जारी है। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'विदेशी निवेशक लगातार घरेलू बाजार को समर्थन दे रहे हैं। इससे वैश्विक बाजारों में कमजोर रुख के बावजूद घरेलू बाजार में तेजी रही। फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक के ब्योरे में ब्याज दर को लेकर आक्रामक रुख तथा अमेरिका-चीन के बीच विवाद से वैश्विक बाजारों में गिरावट का रुख रहा। एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग नुकसान में रहे। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरुआती कारोबार में गिरावट का रुख रहा।

ग्राहकों को कार्ड नेटवर्क चुनने का विकल्प जल्द देंगे बैंक

नई दिल्ली (भाषा)।

ग्राहक जल्द ही अपनी पसंद के मुताबिक यह तय कर सकेंगे कि उन्हें रुपे कार्ड लेना है या फिर वीजा अथवा मास्टर कार्ड। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने यह प्रस्ताव किया है कि कार्ड जारी करने वाले बैंकों और गैर बैंकिंग इकाइयों को अपने ग्राहकों को कार्ड नेटवर्क चुनने का विकल्प देना चाहिए।

अधिकृत कार्ड नेटवर्क डेबिट , क्रेडिट या प्रीपेड कार्ड जारी करने के लिए बैंकों और गैर बैंकिंग इकाइयों के साथ गठजोड़ करते हैं। फिलहाल किसी ग्राहक को जारी किए जाने वाले कार्ड के लिए संबद्ध नेटवर्क का विकल्प कार्ड जारी करने वाले तय करते हैं। यह कार्ड जारी करने वाले और कार्ड नेटवर्क के साथ द्विपक्षीय समझौते की व्यवस्था पर आधारित होता है।

आरबीआई के बुधवार को जारी परिपत्र के मसौदे के अनुसार, कार्ड जारीकर्ताओं को कार्ड नेटवर्क के साथ किसी भी ऐसी व्यवस्था या समझौता करने से प्रतिबंधित किया जाएगा जो उन्हें अन्य कार्ड नेटवर्क की सेवाओं का लाभ उठाने से रोकता है। मसौदे के अनुसार कार्ड जारी करने वाले अपने पात्र ग्राहकों को विभिन्न कार्ड नेटवर्कों (रुपे , मास्टर और वीजा आदि) में से किसी एक को चुनने का विकल्प प्रदान करेंगे। इस विकल्प का उपयोग ग्राहक या तो जारी होने के समय या उसके बाद किसी भी समय कर सकते हैं। इसके अलावा , इसमें कहा गया है कि कार्ड जारी करने वाले को एक ही कार्ड नेटवर्क पर निर्भर नहीं होना है। उन्हें एक से अधिक कार्ड नेटवर्क आधारित कार्ड जारी करने चाहिए।

भारत में अधिकृत कार्ड नेटवर्क में अमेरिकन एक्सप्रेस बैंकिंग कार्प, डाइनर्स क्लब इंटरनेशनल, मास्टरकार्ड एशिया / पैसिफिक पीटीई लिमिटेड, नेशनल पेमेंट्स कारपोरेशन आफ इंडिया रुपे और वीजा वर्ल्डवाइड लिमिटेड हैं। केंद्रीय बैंक ने चार अगस्त तक मसौदा परिपत्र पर संबंधित पक्षों से टिप्पणियां मांगी हैं।

RRB के काम की समीक्षा करेंगी वित्त मंत्री

नई दिल्ली (भाषा)।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जल्दी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) के प्रमुखों के साथ बैठक कर कामकाज की समीक्षा कर सकती हैं। वित्तीय समावेश और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कर्ज जरूरतों को पूरा करने में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सूत्रों के अनुसार वित्त मंत्री क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की तरफ से कृषि और संबद्ध क्षेत्रों को दिये गए किसान क्रेडिट कार्ड के संदर्भ में प्रगति की समीक्षा करेंगी। अधिकतम संख्या में किसानों को केसीसी ऋण का लाभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दो लाख करोड़ रुपए के क्रेडिट प्रोत्साहन के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक विशेष अभियान शुरू किया गया था। इसका मकसद किसान क्रेडिट कार्ड के तहत 2.5 करोड़ किसानों को लाना था। वह कुछ कमजोर आरआरबी की पूंजी स्थिति की भी समीक्षा कर सकती हैं। इससे पहले, दिन में सीतारमण ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रमुखों के साथ बैठक की। बैठक में उन्होंने बैंकों के वित्तीय प्रदर्शन की समीक्षा की। साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं के लिए निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने में बैंकों की प्रगति का जायजा लिया।

इन योजनाओं में पीएम स्वनिधि (रेहड़ी-पटरी वालों के लिये पीएम आत्मनिर्भर निधि), स्टैंड अप इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, अटल पेंशन योजना और कोविड-19 से प्रभावित इकाइयों की मदद के लिये आपात ऋण सुविधा गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) शामिल हैं। सूत्रों ने कहा कि बैठक में बैंकों की कर्ज वृद्धि, संपत्ति गुणवत्ता और कारोबार वृद्धि योजना की भी समीक्षा की। इसके अलावा गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) और उसकी वसूली की भी चर्चा हुई।

छत्तीसगढ़ सरकार के कर्मचारियों का डीए बढ़ा

रायपुर (भाषा)।

छत्तीसगढ़ में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस सरकार ने बृहस्पतिवार को राज्य के कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ते (डीए) में पांच प्रतिशत की बढोतरी कर दी। राज्य में अब डीए 38 प्रतिशत हो गया है।

राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि आज मंत्रिमंडल की बैठक में छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य के शासकीय कर्मचारियों को बड़ी सौगात देते हुए महंगाई भत्ते (डीए) में पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इससे राज्य सरकार को प्रतिवर्ष एक हजार करोड़ रुपए का अतिरिक्त वित्तीय भार आएगा।

देश में इलेक्ट्रानिक पुर्जों पर आयात शुल्क सर्वाधिक

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत में इलेक्ट्रानिक क्षेत्र में कलपुर्जों के आयात पर अन्य प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में सबसे ऊंचा शुल्क है। पांच देशों में इलेक्ट्रानिक क्षेत्र में पुर्जों के आयात पर शुल्क का अध्ययन करने के बाद उद्योग संगठन इंडिया सेल्युलर एंड इलेक्ट्रानिक्स एसोसिएशन (आईसीईए) ने एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी।

आईसीईए ने बृहस्पतिवार को कहा कि ज्यादा शुल्क से प्रतिस्पर्धा पर असर पड़ता है। उद्योग ने इसे कम कर वियतनाम व अन्य प्रतिस्पर्धी देशों के समान करने की मांग की है। आईसीईए ने कहा कि यह अध्ययन वित्त वर्ष 2025-26 तक 120 अरब डालर के निर्यात सहित 300 अरब डालर के इलेक्ट्रानिक्स उत्पादन लक्ष्य तक पहुंचने के लिए भारत की प्रतिस्पर्धी क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए जरूरी है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में शुल्क वियतनाम (एफटीए शुल्क के लिए) की तुलना में 98 प्रतिशत तक ज्यादा है और थाइलैंड से यह 90 प्रतिशत अधिक है।

भारत में इलेक्ट्रानिक्स उद्योग के शीर्ष निकाय आईसीईए ने रिपोर्ट में बताया कि प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्थाओं में भारत की तुलना में शुल्क श्रेणियों दोगुना या अधिक हैं। शून्य शुल्क श्रेणी भी उन देशों में ज्यादा हैं। आईसीईए ने अपने शोध में पांच देशों- भारत, चीन, वियतनाम, थाइलैंड और मेक्सिको में 120 प्रमुख कलपुर्जों पर शुल्क दरों का आकलन किया है।

टियागो माडल की बिक्री पांच लाख इकाइयों के पार

नई दिल्ली (भाषा)।

टाटा मोटर्स ने अपने टियागो माडल की पांच लाख इकाइयों की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। कंपनी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। वाहन कंपनी ने बयान में कहा, 'अंतिम एक लाख गाड़ियों की बिक्री मात्र 15 माह में हुई है, जो ग्राहकों में इसकी बढ़ती लोकप्रियता का संकेत है।'

टियागो पेट्रोल, सीएनजी और इलेक्ट्रिक विकल्पों में उपलब्ध है। इसके अलावा टियागो एनआरजी स्पोर्ट्स यूटीलिटी व्हीकल (एसयूवी) से प्रेरित डिजायन में आती है, जो पेट्रोल और सीएनजी दोनों संस्करणों में उपलब्ध है।

जून के आंकड़ों में खुदरा महंगाई 4.26% पर रहने के आसार

मुंबई (भाषा)।

सब्जियों के दाम में तेजी और ईंधन की कीमतें स्थिर रहने के बावजूद खुदरा महंगाई दर जून में 4.26 प्रतिशत पर स्थिर रह सकती है। मई में यह 4.25 प्रतिशत थी। ब्रिटेन की ब्रोकरेज कंपनी बार्कलेज ने यह कहा है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में खाद्य और ईंधन की हिस्सेदारी करीब 60 प्रतिशत है।

बार्कलेज इंडिया के अर्थशास्त्रियों ने एक रिपोर्ट में कहा कि खाद्य वस्तुओं के दाम में तेजी और ईंधन के दाम स्थिर रहने के बीच खुदरा मुद्रास्फीति मई में 4.25 प्रतिशत के मुकाबले जून में इसी स्तर पर रह सकती है।

उल्लेखनीय है कि टमाटर, आलू और प्याज के दाम में तेजी के साथ सब्जियों की कीमत हाल के सप्ताह में ऊंची बनी हुई हैं।

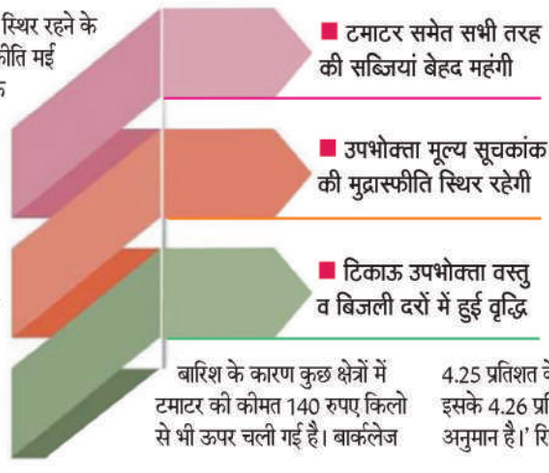

बारिश के कारण कुछ क्षेत्रों में टमाटर की कीमत 140 रुपए किलो से भी ऊपर चली गई है। बार्कलेज इंडिया के प्रमुख राहुल बजोरिया की अध्यक्षता में तैयार रिपोर्ट में कहा गया है, 'हमारा अनुमान है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति जून में स्थिर रहेगी। मई में 4.25 प्रतिशत के मुकाबले जून में इसके 4.26 प्रतिशत रहने का अनुमान है।' रिपोर्ट के अनुसार, 'खाद्य वस्तुओं के दाम में तेजी से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में मासिक आधार पर 0.53 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है जो मई में 0.51 प्रतिशत था।'

बार्कलेज के अनुसार, मुख्य मुद्रास्फीति (खाद्य और ईंधन को छोड़कर) जून में 5.17 प्रतिशत पर स्थिर रहने का अनुमान है जो मई में 5.15 प्रतिशत थी। रिपोर्ट के अनुसार, कपड़ा और जूता-चप्पल, स्वास्थ्य तथा शिक्षा, घरेलू सामान आदि के मामले में कीमत में वृद्धि जारी रह सकती है। लेकिन इसमें जो वृद्धि होगी, उसका कारण मौसमी, गर्मियों में टिकाऊ उपभोक्ता उपकरणों और मनोरंजन तथा आराम से जुड़े क्षेत्रों में मांग है।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि मासिक आधार पर गर्मी बढ़ने से टमाटर जैसे जल्दी खराब होने वाले जिंस के दाम बढ़े हैं। इसके अलावा टिकाऊ उपभोक्ता सामान और बिजली दरों में भी वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन सबके बावजूद खाद्य मुद्रास्फीति जून में 3.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है जो मई में 3.3 प्रतिशत थी।

गेमिंग, कसीनो, घुड़दौड़ पर 28% जीएसटी पर सहमति

नई दिल्ली (भाषा)।

ऑनलाइन गेमिंग, घुड़दौड़ और कसीनो पर मंत्री समूह व्यापक रूप से तीनों आपूर्तियों पर 28 प्रतिशत की दर से माल एवं सेवा कर (जीएसटी) लगाने पर सहमत है। सूत्रों ने यह जानकारी देते हुए कहा कि ऑनलाइन गेमिंग पर कर की दर को लेकर गोवा असहमत है। गोवा ने इस मंच शुल्क पर 18 प्रतिशत का कर लगाने का सुझाव दिया है।

कराधान की दर के साथ-साथ जीएसटी परिषद की 11 जुलाई को होने वाली बैठक में कुछ अन्य चीजों पर भी विचार किया जाएगा। बैठक में यह विचार होगा कि क्या कर कुल गेमिंग राजस्व (जीजीआर) या मंच द्वारा लिए जाने वाले शुल्क पर लगना चाहिए।

वनडे वर्ल्ड कप के लिए क्वॉलीफाई करने वाली आखिरी टीम बनी नीदरलैंड

क्वॉलीफायर के सुपर-6 चरण में स्कॉटलैंड को चार विकेट से हराया

बुलावायो (एजेंसी)। नीदरलैंड ने बास डी लीड (पांच विकेट और 123 रन) के उच्चस्तरीय हरफनमौला प्रदर्शन की बदौलत विश्व कप क्वॉलीफायर के सुपर-6 चरण में गुरुवार को स्कॉटलैंड को चार विकेट से मात देकर मुख्य टूर्नामेंट में जगह बना ली। स्कॉटलैंड ने ब्रैंडन मैकमुलेन (106) के शतक की मदद से नीदरलैंड के सामने 50 ओवर में 278 रन का लक्ष्य रखा।

नीदरलैंड को एकदिवसीय विश्व कप 2023 के लिए क्वॉलीफाई करने की खातिर यह लक्ष्य 44 ओवर में प्राप्त करना था। डी लीड ने शतक जड़कर नीदरलैंड को 42.5 ओवर में लक्ष्य तक पहुंचाकर भारत में अक्टूबर-नवंबर में होने वाले विश्व कप 2023 में प्रवेश दिला दिया। डी लीड ने 92 गेंद खेलकर सात चौकों और पांच छक्कों की मदद से 123 रन बनाए। उनके अलावा नीदरलैंड का कोई बल्लेबाज अर्धशतक भी नहीं जड़ सका।

विक्रमजीत सिंह ने 40 और साकिब ने 33 रन का योगदान दिया। स्कॉटलैंड के लिए माइकल लीस्क ने दो विकेट झटके। इससे पहले स्कॉटलैंड के लिए ब्रैंडन मैकमुलेन के अलावा कप्तान बैरिंगटन ने 84 गेंद में 64 रन का योगदान दिया। वहीं मक्ब्राइड ने 32 रन और मैकिनटॉश ने 38 रन बनाएनीदरलैंड के लिए डी लीड ने 10 ओवर में 52 रन देकर पांच विकेट चटकाए। नीदरलैंड छह अक्टूबर को हैदराबाद में पाकिस्तान के खिलाफ अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत करेगा। भारत और नीदरलैंड दो नवंबर को मुंबई में आमने-सामने होंगे। नीदरलैंड ने इस जीत के साथ विश्व कप क्वालीफायर के फाइनल में जगह भी बनायी, जहां उसका सामना रविवार को श्रीलंका से होगा।

नीदरलैंड के लीड ने बनाया कीर्तिमान

नीदरलैंड के बास डी लीड (पांच विकेट और 123 रन) ऐसे चौथे हरफनमौला हैं जिन्होंने एक ही वनडे मैच में पांच विकेट भी चटकाए और शतक भी जड़ा। उनसे पहले केवल विवियन रिचर्ड्स (वेस्ट इंडीज), पॉल कॉलिंग्वुड (इंग्लैंड) और रोहन मुस्तफा (संयुक्त अरब अमीरात) ने ऐसा किया है।

पांचवीं बार वर्ल्ड कप खेलेगा नीदरलैंड

नीदरलैंड ने वनडे वर्ल्ड कप के लिए पांचवीं बार क्वॉलीफाई किया है। वह इससे पहले 1996, 2003, 2007, 2011 में वर्ल्ड कप के लिए खेल चुका है।

वनडे वर्ल्ड कप 2023 के लिए 10 टीमें तय

भारत की मेजाबनी में आयोजित होने वाले वनडे वर्ल्ड कप 2023 के लिए 10 टीमें तय हो गई हैं। जिसमें भारत के अलावा ऑस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड, श्रीलंका, साउथ अफ्रीका और नीदरलैंड।

100वें टेस्ट में स्मिथ फेल, ऑस्ट्रेलिया पहली पारी में 263 रन पर ऑलआउट

एशेजः मार्क वुड ने झटके पांच विकेट, मार्श का शतक, इंग्लैंड 68/3 रन

लीड्स (एजेंसी)। मार्क वुड की घातक गेंदबाजी से इंग्लैंड ने तीसरे एशेज क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में 263 रन पर समेटकर स्टंप्स तक पहली पारी में तीन विकेट पर 68 रन बना लिए हैं। हालांकि इंग्लैंड अभी 195 रन पीछे हैं। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के एक समय 240 रन पर 4 विकेट गिरे थे। लेकिन इंग्लैंड ने शानदार वापसी करते हुए 23 गेंद के अंदर 6 विकेट निकालकर 263 पर ढेर कर दिया। चोटिल खिलाड़ी के विकल्प के तौर पर लगभग चार साल में पहला टेस्ट खेल रहे ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर मिशेल मार्श 118 गेंद में 118 रन की पारी खेली। इसके अलावा कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल सका। डेवडि वॉर्नर 04 रन, उस्मान ख्वाजा 13 रन, मार्नस लाबुशेन 21 रन और 100वां टेस्ट खेल रहे स्टीव स्मिथ 22 रन विफल रहे। इंग्लैंड के मार्क वुड ने 11.4 ओवर में 34 रन देकर 5 विकेट झटके। इसके अलावा क्रिस वोक्स को भी तीन विकेट मिले। इंग्लैंड की पहली पारी में जैक क्राउली 33 रन, बेन डकेट 02 रन और हैरी ब्रूक 03 रन के रूप में शीर्षक्रम के तीन बल्लेबाज पवेलियन लौट गए हैं। जो रूट 19 रन और जॉनी बेयरस्टो 02 रन बनाकर क्रीज पर हैं।

स्कोर बोर्ड

ऑस्ट्रेलिया पहली पारी	रन	गेंद	4/6
वॉर्नर कै. क्रॉली बो. ब्रॉड	04	05	1/0
उस्मान ख्वाजा बो. वुड	13	37	2/0
लाबुशेन कै. रूट बो. वोक्स	21	58	4/0
स्मिथ कै. बेयरस्टो बो. ब्रॉड	22	31	1/1
हेड कै. रूट बो. वोक्स	39	74	5/0
मार्श कै. क्रॉली बो. वोक्स	118	118	17/4
कैरी कै. वोक्स बो. वुड	08	16	1/0
मिचेल स्टार्क बो. वुड	02	10	0/0
पैट कमिंस एगबाघा वुड	00	02	0/0
टॉड मार्फी बो. वुड	13	12	3/0
स्कॉट बोलैंड नाबाद	00	04	0/0

अतिरिक्त: 23, **कुल:** 60.4 ओवर में 263 रन पर ऑल आउट **विकेट पतन:** 1-4 , 2-42, 3-61, 4-85, 5-240, 6-245, 7-249, 8-249, 9-254, 10-263 **गेंदबाजी:** स्टुअर्ट ब्रॉड 11.4-0-58-2 , ऑली रॉबिंसन 11.2-2-38-0, मार्क वुड 11.4-4-34-5, क्रिस वोक्स 17-1-73-3, मोईन अली 9-1-40-0 ।

इंग्लैंड पहली पारी	रन	गेंद	4/6
जैक क्रॉली कै. वॉर्नर बो. मार्श	33	39	3/0
बेन डकेट कै. कैरी बो. कमिंस	02	06	0/0
हैरी ब्रूक कै. स्मिथ बो. कमिंस	03	11	0/0
जो रूट नाबाद	19	43	2/0
जॉनी बेयरस्टो नाबाद	01	19	0/0

अतिरिक्त: 10, **कुल:** 19 ओवर में तीन विकेट पर 68 रन **विकेट पतन:** 1-18, 2-22, 3-65 **गेंदबाजी:** मिचेल स्टार्क 7-2-18-0, पैट कमिंस 6-1-28-2, स्कॉट बोलैंड 3-0-7-0, मिचेल मार्श 3-1-9-1

100 टेस्ट मैच खेलने वाले 15वें ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बने स्मिथ

ऑस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ इंग्लैंड के खिलाफ जारी तीसरे टेस्ट मैच में उतरने के साथ 100 टेस्ट मैच खेलने वाले 15वें ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बन गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के लिए सर्वाधिक टेस्ट मैच खेलने वाले खिलाड़ियों में 168 मैचों के साथ रिकी पोंटिंग और स्टीव वॉ पहले स्थान पर हैं। इसके अलावा एलन बॉर्डर, शेन वॉर्न, मार्क वॉ, ग्लेन मैकग्राथ, नाथन लियोन, इयान हीली, माइकल क्लार्क, डेविड बून, डेविड वार्नर, जस्टिन लैंगर, मार्क टेलर और मैथ्यू हेडन ने भी ऑस्ट्रेलिया की और में 100 या इससे अधिक टेस्ट मैच खेले।

ब्रॉड ने वॉर्नर को 16वीं बार बनाया अपना शिकार

ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज डेविड वॉर्नर टेस्ट क्रिकेट में 16वीं बार आउट किया है। इसी के साथ इंग्लैंड के तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने वेस्टइंडीज के मैल्कम मार्शल की बराबरी की, जिन्होंने इंग्लैंड के ग्राहम गूच को टेस्ट में 16 बार आउट किया था। एक बल्लेबाज को सबसे ज्यादा बार आउट करने का रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के महान ग्लेन मैकग्राथ के नाम है। उन्होंने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइक अर्थटन को 34 टेस्ट पारियों में 19 बार आउट किया है। भारतीय खिलाड़ियों में कपिल देव ने पाकिस्तान के मुदस्सर नजर को केवल 24 पारियों में 12 बार आउट किया है। वहीं भारत के चेतेश्वर पुजारा सर्वाधिमक 13 बार नाथन लियोन का शिकार बने हैं।

टेस्ट में सर्वाधिक बार एक बल्लेबाज को आउट करने वाले गेंदबाज

19 - ग्लेन मैक्ग्रा बनाम माइक एथरटन
18- एलेक बेडसर बनाम आर्थर मॉरिस
17 - कर्टली एम्ब्रोस बनाम माइक एथरटन
17 - कर्टनी वॉल्श बनाम माइक एथरटन
16 - मैल्कम मार्शल बनाम ग्राहम गूच
16- स्टुअर्ट ब्रॉड बनाम डेविड वार्नर

दलीप ट्रॉफी: मध्य क्षेत्र पहली पारी में 128 रन पर ऑलआउट

पश्चिम क्षेत्र की बढ़त 200 के पार

अलुर (एजेंसी)। अर्जन नागवासवाला (74/5) की अगुआई में गेंदबजों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद सूर्यकुमार यादव (52) और चेतेश्वर पुजारा (50 नाबाद) के अर्धशतकों से पश्चिम क्षेत्र ने मध्य क्षेत्र के खिलाफ दलीप ट्रॉफी सेमीफाइनल के दूसरे दिन गुरुवार को 241 रन की बढ़त बना ली। पहली पारी में 220 रन बनाने वाले पश्चिम क्षेत्र ने मध्य क्षेत्र को मात्र 128 रन पर ऑलआउट कर दिया।

मध्य क्षेत्र की ओर से रिंकू सिंह सर्वाधिक 48 रन, ध्रुव जुरेल 46 रन और सौरभ कुमार 12 रन के अलावा कोई भी बल्लेबाज दहाई का आंकाड़ा पार नहीं कर सका। नागवासवाला के अलावा अतीत सेठ ने तीन और चिंतन गज ने दो विकेट लिए। पश्चिम ने दिन की शुरुआत 216/8 के स्कोर से की और मध्य क्षेत्र ने बचे हुए दो विकेट लेने में ज्यादा समय व्यर्थ नहीं किया। पश्चिम क्षेत्र ने दूसरी पारी में तीन विकेट पर 149 रन बना लिए हैं। पश्चिम क्षेत्र के बल्लेबाज दूसरी पारी में अधिक आक्रामकता के साथ पिच पर उतरे। पृथ्वी शॉ (25 रन) और प्रियांक पांचाल (15 रन) आक्रामक

बल्लेबाजी की कोशिश में आउट हो गए, लेकिन पुजारा और सूर्यकुमार ने अपना-अपना अर्धशतक पूरा किया। सूर्यकुमार ने सौरभ कुमार (34/2) का शिकार होने से पहले 58 गेंद पर 52 रन बनाये, जबकि पुजारा 103 गेंद पर 50 रन बनाकर नाबाद रहे। सरफराज खान (छह नाबाद) पुजारा के साथ क्रीज पर मौजूद हैं। एक अन्य सेमीफाइनल में उत्तर क्षेत्र ने गेंदबाजों के संयुक्त प्रयास की बदौलत पहली पारी में दक्षिण क्षेत्र पर तीन रन की बढ़त बना ली। पहली पारी में 198 रन बनाने वाले उत्तर क्षेत्र ने मैच के दूसरे दिन दक्षिण क्षेत्र को 195 रन पर ऑलआउट किया।

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 सीरीज से पहले आवेश चोटिल

बीसीसीआई ने वेस्टइंडीज दौरे पर पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान बुधवार को किया। टीम चयन के एक दिन बाद ही भारत को बड़ा झटका लगा। टीम के तेज गेंदबाज आवेश खान दलीप ट्रॉफी में खेलते हुए चोटिल हो गए। वेस्ट जोन और सेंट्रल जोन के बीच खेले जा रहे सेमीफाइनल मैच में वेस्ट जोन के कप्तान शिवम मावी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। लेकिन भारतीय टीम में शामिल आवेश खान इस समय सेंट्रल जोन की तरफ से खेल रहे हैं। वह मैच के पहले दिन कैच लेते समय टीम के साथ रिंकू सिंह से टकरा गए, जिसे उनके कंधे पर चोट लग गई और वह मैदान से बाहर चले गए। उन्हें फिर वार्म-अप करते हुए भी नहीं देखा गया था। पहले दिन उन्होंने सिर्फ 11 ओवर फेंके और 26 रन देकर एक विकेट हासिल किया। आवेश खान ने भारतीय टीम के लिए अपना आखिरी टी-20 मैच एशिया कप 2022 में खेला था। उसके बाद से वह टीम से बाहर चल रहे थे। अब उन्हें वेस्टइंडीज टूर पर टीम इंडिया का हिस्सा बनाया गया है। लेकिन वेस्टइंडीज टूर से पहले ही उनकी चोट चिंता बढ़ाने वाली है।

राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप के लिए भारतीय भारोत्तोलन टीम घोषित

नई दिल्ली। दो बार के स्वर्ण पदक विजेता अजय सिंह 12 जुलाई से ग्रेटर नोएडा में शुरू होने वाली राष्ट्रमंडल भारोत्तोलन चैंपियनशिप में मेजबान भारत के अभियान की अगुवाई करेंगे। भारतीय भारोत्तोलन महासंघ (आईडब्ल्यूएफ) ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। भारत दूसरी बार इस टूर्नामेंट की मेजबानी कर रहा है, जबकि 2015 में पुणे में इसका सफल आयोजन किया जा चुका है।टोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता मीराबाई चानू अमेरिका में जांघ की चोट से उभर रही हैं और इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पाएंगी। राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता जेरेमी लालरिनुंगा, अचिंता शुयुली और बिंदियारानी देवी भी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रहे हैं।चैंपियन खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में सभी की निगाहें राष्ट्रमंडल खेल रजत पदक विजेता लवप्रीत सिंह, पूर्व एशियाई चैंपियन झिल्ली डालाबेहेरा और राष्ट्रमंडल खेल कांस्य पदक विजेता हजिंदर कौर पर होंगी।सीनियर, जूनियर और यूथ स्तर पर होने वाली राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप का आयोजन ग्रेटर नोएडा के गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में 12 से 16 जुलाई के बीच होगा, जिसके बाद भारत 28 जुलाई से पांच अगस्त के बीच एशियाई जूनियर और यूथ भारोत्तोलन चैंपियनशिप की मेजबानी भी करेगा।

नम आंखों के साथ तमीम इकबाल ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को कहा अलविदा

चटगांव। बांग्लादेश के कप्तान तमीम इकबाल ने एकदिवसीय विश्व कप 2023 से सिर्फ तीन महीने पहले गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। संन्यास की घोषणा करते हुए भावुक हुए तमीम ने कहा, यह मेरे करियर का अंत है। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। मैं इसी क्षण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले रहा हूं। अफगानिस्तान के खिलाफ मेरा आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच था। तमीम अपने देश के लिए सर्वाधिक एकदिवसीय रन (8313) और शतक (14) बनाने वाले खिलाड़ी हैं। तमीम ने कहा, अगर मैं किसी को धन्यवाद देना भूल गया तो मुझे खेद है। जिसने भी मुझे एक क्रिकेटर और इंसान के रूप में विकसित होने में मदद की है, मैं आप सभी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं। मेरी मां, मेरा भाई, पत्नी और दो बच्चे। उन्होंने कष्ट सहा। मेरी यात्रा में बहुत कुछ है। उनके पास भी संजोने के लिये बहुत कुछ है। मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूं। मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है।

एमर्जिंग एशिया कप का शेड्यूल जारी

नई दिल्ली। एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) ने एमर्जिंग एशिया कप 2023 का शेड्यूल जारी कर दिया है। वनडे प्रारूप में खेले जाने वाले एमर्जिंग एशिया कप की शुरुआत 13 जुलाई (2023) से होगी। टूर्नामेंट श्रीलंका की मेजाबानी में खेला जाएगा, जिसमें कुल 8 टीमें शामिल होंगी. टूर्नामेंट का फाइनल मैच 23 जुलाई को होगा। टूर्नामेंट का पहला मैच 13 जुलाई को श्रीलंका-ए और बांग्लादेश-ए के बीच खेला जाएगा। वहीं इंडिया-ए टूर्नामेंट की शुरुआत14 जुलाई से यूएई-ए के खिलाफ मैच खेलकर करेगी। **भारत का शेड्यूल:** 14 जुलाई- भारत-ए बनाम यूएई-ए, 17 जुलाई- भारत-ए बनाम नेपाल, 19 जुलाई- भारत-ए बनाम पाकिस्तान-ए ।

पीसीबी प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बने जका अशरफ

लाहौर। जका अशरफ ने गुरुवार को पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की 10-सदस्यीय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया। पीसीबी ने एक बयान में कहा कि प्रबंधन समिति के प्रमुख के रूप में अशरफ की नियुक्ति से संबंधित सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली गयी हैं। पीसीबी के वरिष्ठ अधिकारियों ने मुख्यालय में आगमन पर नये प्रमुख का स्वागत किया, जहां वह 10 सदस्यीय समिति की बैठक की अध्यक्षता करने वाले थे। पाकिस्तान सरकार ने बुधवार को इस 10 सदस्यीय प्रबंधन समिति को मंजूरी दी थी। उल्लेखनीय है कि गठबंधन सहयोगी पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) द्वारा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ पर दबाव बनाए जाने के बाद अशरफ को पीसीबी प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया है।

डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर में जीतीं मनिका

नई दिल्ली। भारत की स्टार टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा ने गुरुवार को दुनिया की 15वें नंबर की खिलाड़ी चेन आई चिंग को हराकर डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर जुब्लजाना के महिला एकल प्री क्वॉर्टर फाइनल में जगह बनाई। दुनिया की 32वें नंबर की खिलाड़ी मनिका ने चीनी ताइपे की अपनी प्रतिद्वंद्वी को सिर्फ 23 मिनट में 11-4, 11-9, 11-7 से हराया। चिंग मिश्रित युगल वर्ग में ओलंपिक पदक विजेता हैं। उन्होंने विश्व चैंपियनशिप की युगल और टीम स्पर्धाओं में कई पदक जीते हैं। मनिका अगले दौर में बर्नाडेटे जोक्स और एड्रिया डियाज के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता से भिड़ेंगी। वह महिला एकल ड्रॉ में हिस्सा ले रही एकमात्र भारतीय हैं।

जून-जुलाई के महीने में भी काफी ठंडी रहती हैं ये जगहें, फैमिली के साथ करें एक्सप्लोर

गर्मियों का मौसम शुरू होते ही लोग ठंडी जगहों पर जाने का प्लान बनाने लगते हैं। गर्मियों में बच्चों के भी स्कूल की छुट्टियां हो जाती हैं। ऐसे में माता-पिता पहले से ही ट्रिप प्लान कर लेते हैं। ऐसे में अगर आप भी गर्मी में कहीं ऐसी जगह जाने का प्लान बना रहे हैं जो ठंडी जगहें हों, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं जो जून-जुलाई के महीने में भी काफी ठंडी रहती हैं। आइए जानते हैं इन जगहों के बारे में...

केदारनाथ- चार धाम की यात्रा में केदारनाथ का अपना विशेष स्थान है। एक समय पर केदारनाथ की यात्रा करना काफी कठिन था। लेकिन वर्तमान समय में केदारनाथ पहुंचना आसान है। हर साल यहां पर लाखों की संख्या में भक्त बाबा केदारनाथ के दर्शन करने उत्तराखंड पहुंचते हैं। उत्तराखंड में स्थिति इस जगह में भगवान शिव वास करते हैं। बता दें कि भारत में 12 ज्योतिलिंगों में से एक लिंग केदारनाथ भी है। जून-जुलाई के महीने में आप भी बच्चों और परिवार के साथ केदारनाथ दर्शन के लिए जा सकते हैं। जून के महीने में यहां का मिनिमम तापमान करीब 4-12 डिग्री के आसपास होता है।

स्पीति वैली- अगर आप भी गर्मियों में किसी ठंडी जगह जाने का प्लान बना रहे हैं तो स्पीति वैली सबसे अच्छा ऑप्शन है। यहां पर आर सूरज ताल, चंद्रताल, धंकार मोनेस्ट्री और कुंजुम पास जैसी कई जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं। जून के महीने में भी यह जगह बर्फ से ढकी होती है। ऐसे में हो सकता है जब आप यहां पर घूमने जाएं तो यहां पर आपको बर्फ की सफेद चादर देखने को मिले। कई बार इस जगह का तापमान -2 डिग्री भी पहुंच जाता है।

सोनमर्ग- अगर आपने अभी तक कश्मीर नहीं देखा है तो आपको गर्मियों में यहां पर घूमने का प्लान जरूर बनाना चाहिए। अप्रैल से जून के महीने में घूमने के लिए सोनमर्ग सबसे अच्छी जगह है। जून-जुलाई के महीने में यहां का टेंपरेचर 7-12 डिग्री तक होता है। यहां पर आप बच्चों के साथ शिकारा बोट राइड का लुत्फ उठा सकते हैं। इसके साथ ही आप सोनमर्ग में गंडोला राइड, जीफ सफारी, फेमस ट्यूलिप्स गार्डन, म्यूजियम आदि भी घूम सकते हैं। यहां पर आप कश्मीरी कुजीन का आनंद और असली पशमीना शॉल की खरीददारी कर सकते हैं।

कल्पा- अगर आप हिमाचल प्रदेश में शिमला और सोलांग घूमकर बोर हो चुके हैं। तो बता दें कि इस गर्मी में आप छुट्टी मनाने के लिए किन्नौर के कल्पा गांव आ सकते हैं। कल्पा गांव में आप सतलज नदी के किनारे फैमिली रिजॉर्ट बुक कर सकते हैं। यहां पर आप खूबसूरत मोनेस्ट्री के साथ-साथ मंदिरों के दर्शन भी कर सकते हैं। इस जगह पर आप बच्चों को सेब के बागान दिखा सकते हैं। बता दें कि इस गांव में मिनिमट टेंपरेचर 7 डिग्री तक रहता है।

विंबलडन — **स्टेन वांवरिका व एलेक्जेंडर ज्वेरेव जीते, मार्टिन और ब्रोवर हारे**

350 ग्रैंडस्लैम मैच जीतने वाले तीसरे खिलाड़ी बने जोकोविच

लंदन (एजेंसी)। सर्बिया के स्टार खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने विंबलडन के दूसरे दौर में जीत दर्ज कर ग्रैंडस्लैम में 350 मैच जीतने वाले वह तीसरे खिलाड़ी बने हैं। जोकोविच से पहले रोजर फेडरर (369) और सेरेना विलियम्स (365) यह कारनामा कर चुकी हैं।

नोवाक जोकोविच ने ऑस्ट्रेलिया के जोर्डन थाम्पसन को 6-3, 7-6, 7-5 से हराकर तीसरे दौर में जगह बनाई। अगले दौर में जोकोविच स्विट्जरलैंड के तीन बार के ग्रैंडस्लैम विजेता स्टेन वांवरिका से भिड़ेंगे। जिन्होंने अर्जेंटीना के टॉमस मार्टिन एट्चेवेरी को 6-3, 4-6, 6-4, 6-2 से हराया। अमेरिकी ओपन 2020 के फाइनल में जगह बनाने वाले एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने नीदरलैंड के क्वॉलीफायर गिज्स ब्रोवर को पहले दौर के मुकाबले में 6-4, 7-6 (4), 7-6 (5) से हराया।

संन्यास के बाद विंबलडन पहुंचीं सानिया बोली, अब बदल गया रोल

भारत की दिग्गज खिलाड़ी सानिया मिर्जा विंबलडन का हिस्सा नहीं हैं। मिर्जा ने इसी साल संन्यास का ऐलान किया था लेकिन वह एक बार फिर विंबलडन पहुंची हैं। हालांकि इस बार वह अलग रोल में नजर आ रही है। सानिया मिर्जा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर तस्वीर शेयर की है जिसमें उन्होंने लिखा, फिर से विंबलडन, हालांकि इस बार अलग रोल में।

महिला वर्ग में केनिन और स्वितोलिना जीती

महिला एकल में सोफिया केनिन और एलिना स्वितोलिना दोनों ने तीसरे दौर में प्रवेश किया। ये दोनों तीसरे दौर में आमने सामने होंगी। स्वितोलिना ने दूसरे दौर में 28वीं वरीय एलिस मर्टेन्स को 6-1, 1-6, 6-1 से हराया । जबकि सोफिया ने चीन की शिन्यु वैंग को सीधे सेट में 6-4, 6-3 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया।

पीवी सिंधु और लक्ष्य कनाडा ओपन के दूसरे दौर में पहुंचे

साई प्रणीत और शिवानी हारे

कैलगरी (एजेंसी)। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पी वी सिंधु और लक्ष्य सेन ने क्रमशः महिला और पुरुष एकल वर्ग में कनाडा ओपन के प्री क्वॉर्टर फाइनल में जगह बनाई। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता चौथी वरीयता प्राप्त सिंधु ने कनाडा की टालिया एनजी को 21-16, 21-9 से हराया। वहीं सेन ने दूसरी वरीयता प्राप्त थाईलैंड के कुंलावुत विदितसर्न को 21-18, 21 - 15 से मात दी। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु का सामना अब जापान की नतसुकी निदाइरा से होगा जबकि सेन ब्राजील के वायगोर कोल्हो से खेलेंगे । इसके अलावा एक अन्य पुरुष एकल मुकाबले में भारतीय शटलर बी साई प्रणीत को ब्राजील के यगोर कोल्हो से हार का सामना करना पड़ा। 32 मिनट तक चल इस मैच में ब्राजील के खिलाड़ी ने भारतीय शटलर को 21-12, 21-17 से मात दी। महिला एकल वर्ग में गड्डे रुथविका शिवानी को राउंड ऑफ-32 में हार का सामना करना पड़ा। रुथविका को थाईलैंड की सुपानिडा केटेथोंग से 21-12, 21-3 से हार मिली।

दक्षिणी मेक्सिको: एक बस खाई में गिरी 29 की मौत

मेक्सिको सिटी, (एजेंसी)। मैक्सिको के ओक्साका राज्य में एक राजमार्ग से एक बस के खाई में गिर जाने से करीब 26 लोगों की मौत हो गई जबकि 20 अन्य लोग घायल हो गए। हादसे की पुष्टि स्थानीय अधिकारियों ने गुरुवार को की। राज्य सरकार के सचिव जोस डी जीसस रोमेरो ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह दुर्घटना बुधवार सुबह मैग्डालेना पेनास्को में हुई, जब वाहन सड़क से फिसलकर 10 मीटर से ज्यादा गहरी खाई में गिर गया। ताजा खबरों के अनुसार मरने वालों की संख्या बढ़कर 29 हो गई है जबकि 19 लोग घायल हैं।

दक्षिण अफ्रीका: जहरीली गैस के रिसाव से 16 मौतें

जोहांसबर्ग, (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग के पूर्व बोक्सबर्ग की एक बस्ती में बुधवार शाम जहरीली गैस का रिसाव होने से कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई। स्थानीय मीडिया ने आपातकालीन अधिकारियों के हवाले से कहा कि प्रारंभिक जांच में अनुमान लगाया जा रहा है कि यह अवैध सोने के खनन से जुड़ा हुआ मामला हो सकता है।नाइट्रेट ऑक्साइड गैस का उपयोग प्राय: खनिक अवैध सोना प्राप्त करने के लिए परित्यक्त खदान से चोरी की गई मिट्टी से सोना निकालने के लिए करते हैं। बोक्सबर्ग की घनी आबादी वाले एंजेलो शैंटी शहर में नाइट्रेट ऑक्साइड का एक गैस सिलेंडर लीक हुई।

पाक में मूसलाधार बारिश से नौ की मौत, 10 घायल

लाहौर, (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्वी महानगर लाहौर में पिछले 24 घंटों के दौरान वर्षाजनित कारणों से करीब नौ लोगों की मौत हो गई और अन्य 10 से अधिक घायल हो गए। राहत एवं बचाव विभाग के मुताबिक लाहौर शहर में रिकॉर्ड 291 मिमी वर्षा दर्ज की, जो पूर्वी पंजाब प्रांत की प्रांतीय राजधानी में पिछले 30 वर्षों के दौरान सबसे अधिक है। बीती शाम शहर के मिश्री शाह इलाके में भारी बारिश के कारण घर की छत ढह जाने से एक परिवार के दंपति और उनके दो बेटों सहित चार सदस्यों की जान चली गई। इसके अलावा शहर के ठोकर सनी पार्क इलाके में एक 11 वर्षीय लड़के की बारिश के पानी में डूब गया, जबकि लाहौर के विभिन्न इलाकों में एक महिला सहित चार अन्य लोगों की करंट लगने से मौत हो गई।

जापान में पुल ढहने से दो श्रमिक मरे, छह घायल

टोक्यो, (एजेंसी)। जापान के सिजुका शहर में गुरुवार को एक्सप्रेसवे पर निर्माणधीन पुल के ढहने से दो श्रमिकों की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए। स्थानीय समयानुसार सुबह करीब 03:10 बजे एक राहगीर ने शिमिजु वार्ड के ओबेन जिले में एक निर्माण स्थल पर एक स्टील संरचना गिरने की आवाज सुनने पर पुलिस को दुर्घटना की सूचना दी। 'जापान टाइम्स' ने स्थानीय पुलिस का हवाले से बताया कि जिन दो श्रमिकों की बाद में मृत्यु की पुष्टि हुई है। उनकी उम्र 50 वर्ष थी। उन्होंने बताया कि दो अन्य श्रमिक गंभीर रूप से घायल हुए हैं।

कुमाऊं में भारी बरसात होने से 58 मार्ग अवरूद्ध

नैनीताल, (एजेंसी)। उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल में भारी बरसात के कारण जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। मलबा और भूस्खलन से दो राज मार्ग समेत 58 सड़कें बाधित हो गयी हैं और जिलों में अलर्ट घोषित कर दिया गया है। कुमाऊं मंडल के नैनीताल, पिथौरागढ़, चंपावत, अल्मोड़ा और बागेश्वर जिलों में गुरुवार सुबह से भारी बारिश हो रही है। जिससे भूस्खलन तथा मलबा आने का खतरा बना हुआ है। नैनीताल जिले में भूस्खलन के कारण 21 सड़कें बंद हो गयी हैं। अल्मोड़ा-रानीखेत मार्ग भी मलबा के कारण बंद हो गया है। इसी प्रकार चंपावत में थलीसैंण-बूंगीधार राज्य मार्ग समेत कुल 17 सड़के मलबा से बंद हैं।

आज का इतिहास

- 1656: सिखों के आठवें गुरू हर किशन का जन्म।
- 1753: संसद के अधिनियम द्वारा ब्रिटिश संग्रहालय की स्थापना।
- 1758: आधुनिक त्रावणकोर के निर्माता राजा मार्तंड वर्मा का निधन।
- 1763: मीर जाफर की बंगाल के नवाब के रूप में दोबारा ताजपोशी।
- 1799: महाराजा रणजीत सिंह का लाहौर पर कब्जा।
- 1898: अमेरिका ने हवाई द्वीप पर अधिकार किया।
- 1941: नाजियों ने यूरोपीय देश लिथुआनिया में 5,000 यहूदियों को मौत के घाट उतारा।
- 1943: रास बिहारी बोस ने आजाद हिंद फौज की कमान नेताजी सुभाष चंद्र बोस को सौंपी।
- 1955: भारत में सर्वप्रथम वन्य प्राणी दिवस मनाया गया।

सुरक्षा का वादा, आठ को लंदन में भारतीय उच्चायोग की रैली

भारतीय राजनयिक पर हमला बर्दाश्त नहीं ब्रिटेन की खालिस्तानियों को कड़ी चेतावनी

लंदन, (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक तत्वों द्वारा आठ जुलाई को लंदन में भारतीय उच्चायोग तक तथाकथित किल इंडिया रैली निकालने की कथित योजना की पृष्ठभूमि में ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने गुरुवार को कहा कि मिशन पर कोई भी हमला पूरी तरह अस्वीकार्य है। ब्रिटेन की सरकार ने किसी भी तरह के सीधे हमले की कड़ी निंदा की। ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने कहा कि लंदन में भारतीय उच्चायोग पर कोई भी सीधा हमला पूरी तरह से अस्वीकार्य है।' उन्होंने कहा कि हमने विक्रम दोराईस्वामी और भारत सरकार को स्पष्ट कर दिया है कि उच्चायोग में कर्मचारियों की सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब खालिस्तानी चरमपंथियों ने सोशल मीडिया मंचों पर भारत विरोधी हमले शुरू कर दिए हैं।

ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने ट्विटर पर घोषणा के माध्यम से देश में भारत के राजनयिक मिशन के कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त किया है। ये टिप्पणियां अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में भारतीय राजनयिक मिशनों को निशाना बनाने वाली धमकियों और हमलों के साथ-साथ ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त विक्रम दुरईस्वामी और बर्मिंघम में भारत के महावाणिज्य दूत डॉ। शशांक विक्रम की तस्वीरों वाले खतरनाक पोस्टरों के ऑनलाइन वायरल किए जाने के जवाब में आई हैं। जेम्स क्लेवरली कहा कि हमने विक्रम दुरईस्वामी और भारत सरकार को स्पष्ट कर दिया है कि

उच्चायोग में कर्मचारियों की सुरक्षा सर्वोपरि है।

खालिस्तानी चरमपंथियों द्वारा मार्च में भारतीय तिरंगा गिराने की कोशिश करने और खिड़कियां तोड़ने की कोशिश के बाद से मध्य लंदन में इंडिया हाउस में मेट्रोपॉलिटन पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय उच्चायोग में सुरक्षा की समीक्षा करने के लिए मेट्रोपॉलिटन पुलिस के साथ काम करेगी, और अपने कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक बदलाव करेगी।'

क्लेवरली का यह बयान ऐसे समय में आया है जब दुनिया के विभिन्न हिस्सों में खालिस्तानी चरमपंथियों द्वारा भारतीय दूतों और वरिष्ठ राजनयिकों को धमकियां दी जा रही हैं। विदेश मंत्री एस। जयशंकर ने सोमवार को संवाददाताओं से कहा था कि 'कट्टरपंथी, चरमपंथी खालिस्तानी विचारधारा' भारत या अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे उसके साझेदार देशों के लिए अच्छी नहीं है।

आतंकवाद के खिलाफ हमेशा कार्रवाई की

पिछले महीने जून में ऑपरेशन ब्लू स्टार की 39वीं बरसी के मौके पर कनाडा में खालिस्तानी समर्थकों ने एक परेड निकाली थी। इसमें इंदिरा गाधी की हत्या को दर्शाती एक झांकी भी दिखाई गई थी। भारत सरकार ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी थी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि वोट बैंक की राजनीति के चलते कनाडा खालिस्तानियों का समर्थन करता है। यह भारत और कनाडा के रिश्तों के लिए ठीक नहीं है। वहीं, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वो (भारत सरकार) गलत हैं। कनाडा ने हमेशा हिंसा और धमकियों को बेहद गंभीरता से लिया है। हमने आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई की है। कनाडा के प्रधानमंत्री से जब यह पूछा गया, कनाडा में इंदिरा गांधी की हत्या को दर्शाती झांकी और भारतीय को मारने का आह्वान करने वाले पोस्टर लगाए जाते हैं।

कनाडा सहित कई देशों से मांगा जवाब

खालिस्तानी पोस्टरों में भारतीय राजनयिकों के नाम के मुद्दे पर विदेश मंत्रालय सख्त प्रतिक्रिया दी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने प्रेस कांफ्रेंस करके कहा कि ये मुद्दा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नहीं बल्कि आतंकवाद का है। भारतीय राजनयिकों, मिशन के खिलाफ हिंसा भड़काने वाले पोस्टर अस्वीकार्य हैं। हमारी सरकार के लिए भारतीय राजनयिकों, मिशन की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे राजनयिक, दूतावास और वाणिज्य दूतावास के खिलाफ हिंसा और धमकी दी जा रही है। हमने सभी सरकारों (ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम, अमेरिका, कनाडा) से इस मुद्दे पर बात की है। कुछ जगह पर प्रतिकिया आई है और कुछ जगहों पर प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रहे हैं। हम इसकी निंदा करते हैं। हमने यह मुद्दा कनाडा सरकार के समक्ष उठाया है। हमने पीएम ट्रूडो की टिप्पणियों के बारे में मीडिया रिपोर्टें देखी हैं। मुद्दा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नहीं है, बल्कि हिंसा की वकालत करने, अलगाववाद का प्रचार करने और आतंकवाद को वैध बनाने के लिए इसके दुरुपयोग का है।

सचिन पायलट के रोल पर हाईकमान करेगा फैसला

वेणुगापोल बोले-सभी मुद्दों का समाधान हो चुका है

जयपुर, (एजेंसी)। एआईसीसी मुख्यालय में राजस्थान के मुद्दे पर बैठक खत्म हुई। करीब चार घंटे की बैठक में सभी नेताओं ने राजस्थान से जुड़े मामले पर फैसले हाईकमान पर छोड़ दिए हैं। हाईकमान जो फैसला करेगा, वह सबको मान्य होगा। सचिन पायलट का रोल तय भी हाईकमान का फैसला करेगा। बैठक में राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राजस्थान के नेताओं को एकजुट होकर चुनाव लड़ने को कहा है। यह भी कहा कि अब किसी तरह के मतभेद की बात सामने नहीं आने चाहिए। बयानबाजी करने पर कार्रवाई होगी। बैठक में नेताओं ने एकजुट होकर चुनाव लड़ने का भरोसा दिलाया। बैठक के बाद संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने पायलट मुद्दे का समाधान निकालने और अब कोई भी मुद्दा नहीं होने का दावा किया है। कहा- सचिन पायलट आज की बैठक में यूनिटी को लेकर बहुत अच्छा बोले और उन्होंने विश्वास जताया कि हम दोबारा सरकार बनाएंगे। पेपरलीक और युवाओं के मुद्दे थे, उस पर विधानसभा में बहुत ही मजबूत कानून लाया जा रहा है। सब मुद्दों का समाधान हो गया है। गहलोत चोट लगने के कारण आ नहीं सके, लेकिन वीसी से पूरे चार घंटे बैठक से जुड़े रहे। अब नेताओं के बीच कोई इश्यू नहीं है, सभी इश्यूज रिजॉल्व हो चुके हैं।

पायलट बोले- पार्टी ने मेरे मुद्दों पर कार्रवाई की रूपरेखा बनाई

राजस्थान चुनावों को लेकर राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे की बैठक के बाद सचिन पायलट के तेवर बदले हैं। पायलट ने बैठक के बाद मान लिया कि उनके मुद्दों को पार्टी ने सुलझाया है। उन्होंने कहा- मुझे खुशी है पार्टी ने मेरे उठाए गए मुद्दों को गंभीरता से लिया है और कार्रवाई करने के लिए आगे की रूपरेखा बनाई है। भाजपा राज के कार्यकाल में तमाम करप्शन हुए उस पर सरकार गंभीर है और कार्रवाई करेगी। मैं ऐसा मानता हूं कि करप्शन ऐसा मुद्दा है जो जन जन को प्रभावित करता है और इस इश्यू को कांग्रेस चुनावी मुद्दा बनाएगी और आगे लेकर जाएगी।

मणिपुर में स्कूल के बाहर महिला को गोली मारी

इंफाल, (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल वेस्ट जिले में गुरुवार को स्कूल के बाहर एक महिला की गोली मारकर हत्या कर दी गई। एक दिन पहले ही यहां स्कूल खोले गए हैं। हालात देखते हुए राज्य सरकार ने इंटरनेट पर बैन 5 दिन और बढ़ा दिया है। राज्य में 64 दिनों से कुकी और मैतेई समुदाय के लोगों के बीच हिंसा जारी है। अब तक 135 से ज्यादा लोग जान गंवा चुके हैं और 400 से ज्यादा लोग घायल हो चुके हैं। मणिपुर सरकार ने 8वीं तक के स्कूल खोलने के आदेश दिए थे।

एक दिन पहले ही खोले गए हैं 8वीं तक के स्कूल, इंटरनेट सर्विस पर बैन पांच दिन बढ़ा

नवीं से 12वीं तक के स्कूल और कॉलेजों को अभी नहीं खोला जाएगा। इन स्कूलों में राहत कैंप लगे हैं। शिविरों में लगभग 50 हजार से ज्यादा लोग रह रहे हैं। राज्य के 16 में से 5 जिलों से कर्फ्यू हटा दिया गया है। अब 11 जिलों में शाम 5 बजे से सुबह 5 बजे तक का कर्फ्यू जारी है। राज्य के हिंसाग्रस्त इलाकों में कुकी और मैतेई समुदाय के लोगों ने अपने बंकर बना रखे हैं।

प्रचंड बोले-भारतीय बिजनेसमैन ने मुझे पीएम बनवाने की कोशिश की

नेपाल के विपक्ष ने इस्तीफा मांगा, कहा- दिल्ली से चुना प्रधानमंत्री मंजूर नहीं

काठमांडू, (एजेंसी)। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचंड के भारतीय बिजनेसमैन को लेकर दिए एक बयान के बाद उनके इस्तीफे की मांग की जा रही है। प्रचंड ने बुधवार को एक बुक लॉन्च इवेंट के दौरान कहा था कि भारतीय बिजनेसमैन सरदार प्रीतम सिंह ने उन्हें प्रधानमंत्री बनवाने की कोशिश की थी।

प्रचंड ने कहा कि मुझे पीएम बनाने के लिए सिंह ने कई बार दिल्ली का दौरा किया था और काठमांडू में कई नेताओं के साथ बैठक की थी। उनके इस बयान को वहां की विपक्षी कम्युनिस्ट पार्टी नेपाल के मामलों में भारत के दखल के तौर पर पेश कर रही है। तस्वीर नेपाल की संसद की है, प्रधानमंत्री प्रचंड के बयान पर विपक्षी पार्टी के सांसदों को हंगामा करते हुए देखा जा सकता है।

तस्वीर नेपाल की संसद की है, प्रधानमंत्री प्रचंड के बयान पर विपक्षी पार्टी के सांसदों को हंगामा करते हुए देखा जा सकता है।

वहीं, विपक्षी पार्टी एमएलए के सांसद रघुजी पंत ने संसद में कहा कि हमें दिल्ली से चुना गया प्रधानमंत्री नहीं चाहिए। विपक्ष के हंगामे के बीच प्रधानमंत्री प्रचंड ने भारतीय बिजनेसमैन सरदार प्रीतम सिंह को लेकर दिए बयान का बचाव किया है। उन्होंने कहा कि हंगामा करने के लिए मेरे बयान का गलत मतलब निकाला गया है।

नेपाल की संसद में उठाया मुद्दा

सीपीएन-यूएमएल के गठबंधन वाली नेपाल की विपक्षी पार्टी ने प्रचंड के बयान का मुद्दा वहां की संसद में भी उठाया। इसके चलते कई बार संसद की कार्यवाही बाधित हुई। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री और सीपीएन-यूएमएल के चेयरमैन केपी शर्मा ओली ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि प्रचंड के बयान ने नेपाल के सम्मान और आजादी को गहरी चोट पहुंचाई है।

जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रगान के दौरान खड़े नहीं हुए 14 लोग

श्रीनगर, (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में राष्ट्रगान बजने के दौरान खड़े न होने वाले 14 लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया गया है। प्रशासन ने कई पुलिसकर्मियों को भी सस्पेंड किया है। इन पुलिसकर्मियों की जिम्मेदारी थी कि नेशनल एंथम बजने के दौरान हरेक शख्स उसके सम्मान में खड़ा हो। मामला 25 जून को हुए 'पैडल फॉर पीस' साइक्लिंग रेस के समापन समारोह का है। यह कार्यक्रम जम्मू-कश्मीर पुलिस ने करवाया था और इसमें उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और डीजीपी दिलबाग सिंह भी शामिल हुए थे।

गिरफ्तार किए गए, जिम्मेदार पुलिसकर्मियों पर भी हुई कार्रवाई

सेक्शन 107 और 151 के तहत किया गया गिरफ्तार: कार्यक्रम में जब नेशनल एंथम बजाया गया तो कई लोग जान-बूझकर इसके सम्मान में खड़े नहीं हुए। जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने राष्ट्रगान के अपमान को गंभीरता से लेते हुए मामले की जांच के आदेश दिए। पुलिस के मुताबिक, 14 लोगों को सेक्शन 107 और 151 के तहत गिरफ्तार किया गया है। ये दोनों सेक्शन पुलिस को अपराध होने की आशंका में लोगों को हिरासत में लेने या गिरफ्तार करने का अधिकार देते हैं। गिरफ्तार किए गए सभी लोगों को सेंट्रल जेल में भेजा गया है।

पांच दिन में 67 हजार यात्री अमरनाथ गुफा पहुंचे

श्रीनगर, (एजेंसी)। 1 जुलाई को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा के पहले 5 दिनों में कुल 67,566 तीर्थयात्रियों ने अमरनाथ गुफा मंदिर के दर्शन कर लिए हैं। बुधवार को बालटाल बेस कैंप और नुनवान बेस कैंप से 18,354 तीर्थयात्री अमरनाथ गुफा के लिए रवाना हुए। इनमें 12,483 पुरुष, 5,146 महिलाएं, 457 बच्चे, 266 साधु और 2 साध्वियां शामिल हैं। गुरुवार को भी 6 हजार यात्रियों के साथ छठा जत्था दोनों बेस कैंप से रवाना हुआ। 62 दिनों तक चलने वाली श्री अमरनाथ यात्रा 31 अगस्त रक्षाबंधन के दिन छड़ी मुबारक के साथ समाप्त होगी।

पहलगाम में छड़ी मुबारक के मुख्य पुजारी महंत दीपेंद्र गिरि की ओर से अमरनाथ तीर्थयात्रियों को लंगर खिलाया जा रहा है। पहलगाम में छड़ी मुबारक के मुख्य पुजारी महंत दीपेंद्र गिरि की ओर से अमरनाथ तीर्थयात्रियों को लंगर खिलाया जा रहा है।

मार्ग पर चल रहे फ्री मेडिकल कैंप

रामबन जिला प्रशासन ने एनएच-44 पर अमरनाथ यात्रियों के लिए नाशरी से बनिहाल तक फ्री मेडिकल कैंप लगाए हैं। नोडल अधिकारी डॉ. ओपिंदर सिंह ने बताया कि लंगर, यात्री निवास और बाकी आवासों में 19 मेडिकल कैंप बनाए गए हैं। जहां यात्रियों के लिए नि:शुल्क दवाएं, एम्बुलेंस सर्विस और टेस्टिंग जैसी सुविधाएं चौबीस घंटे उपलब्ध हैं।

सीएम योगी ने नवचयनित पुलिस कार्मिकों को नियुक्ति पत्र बांटे

उप्र पुलिस का हिस्सा बनने की दीं शुभकामनाएं

लखनऊ, (ब्यूरो)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मिशन रोजगार के अंतर्गत निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से योग्य युवाओं का चयन कर उन्हें सरकारी नौकरी से जोड़ा जा रहा है।

उप्र पुलिस बल में दिन प्रतिदिन के कार्यों व डॉक्यूमेंटेशन के कार्यों को संपादित करने में लिपिकीय संवर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने लिपिकीय संवर्ग के 1148 नवचयनित पुलिस कार्मिकों को उप्र पुलिस परिवार का हिस्सा बनने पर बधाई

एवं शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री गुरुवार को यहां लोक भवन में निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के तहत उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा चयनित लिपिकीय संवर्ग के कुल 1148 पुलिस कार्मिकों के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में अवसर पर अपने विचार व्यक्त रहे थे।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में मिल रही सबसे अच्छी शिक्षा: सीएम केजरीवाल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमारी सरकार बनने के आठ साल बाद पूरी दुनिया के अंदर सबसे अच्छी शिक्षा दिल्ली के सरकारी स्कूलों में मिल रही है।

श्री केजरीवाल ने दिल्ली रोबोटिक्स लीग और एचई-21 प्रदर्शनी के उद्घाटन से पहले कहा कि पूरे देश में शायद पहली बार दिल्ली में स्कूल स्तर पर रोबोटिक्स के क्षेत्र में कंपटिशन करने के बाद राज्य स्तर पर प्रतियोगिता किया जा रहा है। इस तरह की उच्च स्तर की प्रतियोगिता देश में कहीं नहीं की गई। इस प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा दिल्ली सरकार के स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सिलेंस (एसओएसई) के स्कूल हैं।

पाक सेना पांच माह सैन्य अभ्यास नहीं करेगी, आर्मी के पास रिजर्व फ्यूल कम

इस्लामाबाद, (एजेंसी)। पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली का असर उसकी सेना पर पड़ रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सेना ने फ्यूल की कमी होने की वजह से अगले 5 महीने यानी दिसंबर तक कोई भी मिलिट्री ड्रिल नहीं करने का फैसला किया है। मिलिट्री ट्रेनिंग के डायरेक्टर जनरल ने इसे लेकर सभी विभागों को एक लेटर जारी किया है।

इसमें सैन्य अभ्यास टालने की मेन वजह रिजर्व फ्यूल की कमी बताई है। दरअसल, रिजर्व फ्यूल सेना के रूटीन कामों के लिए सुरक्षित रखता है। ये वॉर रिजर्व से अलग है। वॉर रिजर्व जंग लड़ने के लिए सुरक्षित रखा गया फ्यूल होता है। मिलिट्री एक्सपर्ट और भारतीय सेना के रिटायर्ड कर्नल दनवीर सिंह के मुताबिक पाक सैन्य अभ्यास के लिए T-80 टैंक काफी इस्तेमाल में लाता है।

पाक ने यूक्रेन से खरीदे थे टी-80 टैंक

पाकिस्तान के पास 2,467 बैटल टैंक्स हैं। भारत ने जब रूस के टी-90 टैंक्स खरीदे तो उनके काउंटर के लिए पाकिस्तान ने 1996 में इनका डीजल वर्जन टी 80 डी यूक्रेन से खरीदा था। टैंक्स की टेस्टिंग के बाद यूक्रेन से ऐसे 320 टैंक्स खरीदे थे। कर्नल दनवीर सिंह के मुताबिक पाकिस्तान ही नहीं भारतीय सेना को भी 1990 के दशक आर्थिक तंगी के चलते में फ्यूल की कमी हुई थी।

खाने की भी कमी: पाक सेना कर चुकी शिकायत

सिर्फ फ्यूल ही नहीं बल्कि पाक सेना ने खाने की कमी की शिकायत की थी। कई फील्ड कमांडरों ने क्वार्टर मास्टर जनरल को लेटर लिखे थे। फंड की कमी से सैनिकों को हर शुक्रवार मिलिट्री व्हीकल का इस्तेमाल न करने की सलाह दी थी।

पाक के दिवालिया होने का खतरा टला

शाहबाज शरीफ पिछले दिनों पेरिस में थे और उन्होंने सात दिन में चार बार IMF चीफ से मुलाकात के बाद ही डील पर मुहर लग सकी। शाहबाज शरीफ पिछले दिनों पेरिस में थे और उन्होंने सात दिन में चार बार IMF चीफ से मुलाकात की थी।

कन्हैया एनएसयूआई के प्रभारी नियुक्त किए गए

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कांग्रेस ने युवा नेता कन्हैया कुमार को अपनी छात्र इकाई एनएसयूआई का प्रभारी नियुक्त किया है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बताया कि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने श्री कुमार की नियुक्ति के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। श्री कुमार को तत्काल प्रभाव से अपना काम शुरू करने के लिए कहा गया है।

Filmi तड़का

मुसलमानों के राइट्स पर हुमा बोलीं- सरकार जवाब दे

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस हुमा कुरैशी अपनी अपकमिंग फिल्म तरला की वजह से सुर्खियों में बनी हुई हैं। उनकी यह फिल्म 7 जुलाई के दिन ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर रिलीज होने वाली है। हुमा अपनी फिल्म को प्रमोट करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। वह तरला का जमकर प्रमोशन कर रही हैं। हाल ही में उन्होंने अपने एक प्रमोशनल इंटरव्यू के दौरान फिल्म इंडस्ट्री में धर्म के आधार पर बांटे जाने पर खुलकर बात की। इतना ही नहीं, उन्होंने अमेरिका की उस घटना का भी जिक्र किया जब अमेरिकी मीडिया ने मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों के अधिकारों के बारे में पीएम नरेंद्र मोदी से सवाल किए थे। हुमा ने इंटरव्यू के दौरान पूछा कि क्या बॉलीवुड में मुसलमानों के साथ भेदभाव होता है? तब हुमा भड़क गईं। उन्होंने कहा कि आज कल जब मैं ये बातें सुनती हूं तो मुझे लगता है कि ये बातें होती क्यों हैं? एंकर ने उन्हें समझाते हुए कहा, ÷ये बातें सिर्फ इसलिए हो रही हैं क्योंकि हाल ही में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका गए थे तब वहां कि मीडिया ने उनसे एक सवाल पूछा था और वो सवाल भारत के मुसलमानों के राइट्स से जुड़ा था। क्या आपको लगता है ये सवाल सही था? हुमा ने कहा कि मुझे कभी इस बात का एहसास नहीं हुआ कि मैं एक मुस्लिम हूं और मैं अलग हूं। मेरे पिता दिल्ली की कैलाश कॉलोनी में सलीम नाम का एक रेस्तरां चलाते हैं। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में, मैंने कभी ऐसा महसूस नहीं किया। लोगों ने इसे महसूस किया होगा। इतना ही नहीं, हुमा ने आगे कहा कि मुझे लगता है, सवाल पूछे जाने चाहिए और हर सरकार को जवाब देना चाहिए।

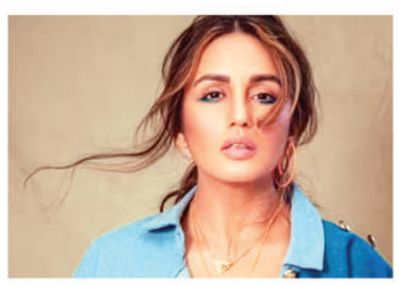

ओह माय गॉड 2 यामी गौतम बनीं वकील

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेत्री यामी गौतम की आने वाली फिल्म ओह माय गॉड-2 से उनका लुक रिलीज हो गया है। ओह माय गॉड के सीक्वल ओह माय गॉड-2 में अक्षय कुमार के साथ पंकज त्रिपाठी और यामी गौतम मुख्य किरदार में हैं। इस फिल्म से यामी का गौतम का लुक सामने आ गया है। अक्षय कुमार ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर यामी गौतम का लुक शेयर किया है। ओह माय गॉड-2 में यामी गौतम वकालत करते हुए नजर आएंगी। पोस्ट को शेयर करते हुए अक्षय कुमार ने कैप्शन में लिखा, सच वही हैं जो साबित किया जा सके। सच के लिए लड़ाई बस शुरू होने वाली है।

बिहार की जनता है परेशान, तेजस्वी महीने भर से विदेश में: सुशील मोदी

मंत्री-अफसर की लड़ाई खुलकर सामने आई

पटना, (एजेंसी)। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं भाजपा के राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने गुरुवार को कहा कि दो दिन की बरसात से शहरी इलाके में लोग जल-जमाव झेल रहे हैं, दरभंगा मेडिकल कॉलेज बंद कर दिया गया, मरीज नाव से अस्पताल पहुंच रहे हैं और उप मुख्यमंत्री तथा कई विभागों के मंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव एक महीने से विदेश में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तरह छुट्टियां मना रहे हैं।

श्री मोदी ने कहा कि गरीबों के मसीहा होने का नाटक करने वालों को बिहार की गर्मी बर्दाश्त नहीं हो रही है। वे विदेश से ट्वीट कर रहे हैं और अब सीधे 10 जुलाई को विधान सभा सत्र के समय सदन में प्रकट होंगे।

उन्होंने कहा कि उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव डीफैक्टो मुख्यमंत्री हैं, इसलिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार किसी भी महत्वपूर्ण मुद्दे पर निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। वे मंत्री-अफसर टकराव के मूकदर्शक बने हुए हैं। भाजपा सांसद ने कहा कि शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर और विभागीय अवर सचिव एक-दूसरे को औकात बताने पर तुले हैं।

मंत्री के आप्त सचिव को शिक्षा विभाग में घुसने पर पाबंदी लगा दी गई और उनकी डाक्ट्रेट डिग्री पर सवाल उठा दिये गए। उन्होंने कहा कि इतने अपमान के बाद तो शिक्षा मंत्री को खुद इस्तीफा दे देना चाहिए। श्री मोदी ने कहा कि पथ निर्माण और स्वास्थ्य जैसे बड़े विभाग श्री तेजस्वी यादव से संभाल नहीं रहे हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र आंकुशपुर में पौधरोपण के साथ मनाया गया वन महोत्सव

प्रखर गाजीपुर। आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र गाजीपुर में वन महोत्सव अंकुशपुर के फार्म पर पौधरोपण कर मनाया गया शुक्रवार को केवीके के कृषि फार्म में दर्जनों की संख्या में ऑक्सीजन देने वाले पौधे लगाए गए और उसके संरक्षण का संकल्प लिया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष श्री आर सी वर्मा जी द्वारा वृक्ष के महत्व एवं पौधारोपण पर अन्नदाता किसानों को इसके महत्व को बताया,वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ जेपी सिंह ने कहा कि वृक्षों के बिना हमारा जीवन शून्य है। वृक्ष ना सिर्फ हमें ऑक्सीजन प्रदान करते है, बल्कि कार्बन डाइआक्साइड जैसे हानिकारक गैसों को अपने अंदर अवशोषित करते हैं। जिसकी वजह से हमारे आस-पास का वातावरण शुद्ध और ताजी हवा का संचार होता रहता है। उद्यान वैज्ञानिक डॉ शशांक सिंह ने कहा कि दुनिया में किसी भी देश का वातावरण उस देश की वर्षा और वायुमंडलीय तापमान पर निर्भर करता है और किसी भी देश की वर्षा और वायुमंडलीय तापमान उस देश के

वृक्षों पर निर्भर करता है। पेड़ों से वर्षा का संतुलन बना रहता है, जिससे कृषि को बहुत फायदा होता है। मृदा वैज्ञानिक डॉ अविनाश कुमार राय ने कहा कि पेड़-पौधों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। पेड़ से हमें फल, पशु चारा, जलाने के लिए लकड़ियां, फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ियां प्राप्त होती हैं। मेड़ पर फलदार तथा फूलों के पौधे लगाने से फल और फूल तो मिलते ही हैं साथ ही साथ छाया मिलती है और पत्तियों के गिरने से खेत की उर्वरा शक्ति में विकास होता है। कोविड-19 के संकट काल में आक्सीजन की कमी पर चर्चा करते हुए अधिक आक्सीजन देने वाले पौधे पीपल, बरगद, नीम, बेल आदि लगाने पर जोर दिया गया। वैज्ञानिक डॉ शशांक शेखर ने नीम, तुलसी एवं अर्जुन के औषधीय गुणों को विस्तारपूर्वक बताया। वैज्ञानिक डा. एके सिंह ने कहा कि वृक्षों का सबसे पहला फायदा यह है की, उसने हमें खाने के लिए फल और सब्जियां दी हैं। वैज्ञानिक डा. नरेंद्र प्रताप ने कहा कि पौधारोपण का प्रचलन प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। सड़कों के किनारे बौद्ध भिक्षुओं, सम्राट अशोक, शेरशाह सूरी तथा मुगल बादशाहों के द्वारा भी बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया गया। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा जंगलों पर पड़ने वाले दबाव को ध्यान में रखते हुए हर मेड़ पर पेड़ लगाने की सोच एक अद्भुत निर्णय है। पेड़-पौधों की जड़ों, पत्तियों, फल और फूलों का उपयोग कर-के कई प्रकार की जीवनरक्षक दवाएं बनाई जाती हैं। जिससे हमें गंभीर रोगों के इलाज में मदद मिलती है। वरिष्ठ विज्ञानी के हेड डॉ आर सी वर्मा कहा कि एक पेड़ 50 साल में 17.50 लाख रुपये की आक्सीजन देते हैं। 41 लाख रुपये के पानी का रिसाइक्लिंग करता है तथा 35 लाख रुपये के वायु प्रदूषण का नियंत्रण एवं 18 लाख रुपये के जमीन कटाव के खर्च को रोकता है। वृक्षों का हमारे जीवन में अमूल्य योगदान है। जीवन की धृष्टि से पर्यावरण मानव के लिए सर्वोच्च जरुरत है। जल, जंगल और जमीन तीनों उसके प्रमुख आधार हैं। सौरमंडल में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिसपर जीवन है क्योंकि यहाँ पर पेड़-पौधे उपस्थित है। केवीके परिसर कर्मचारी गण एवं प्रगतिशील महिला-पुरूष किसानों ने वृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया। सभी प्रगतिशील महिला-पुरूष किसानों को अमरूद तथा सुबूबल के पौधे वितरित किया गया। उद्यान वैज्ञानिक डा. शशांक सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

माफिया मुख्तार की पत्नी आफसा अंसारी के घर पर नोटिस चस्पा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। माफिया मुख्तार अंसारी और उनके करीबियों पर मुसीबतें लगातार बढ़ती ही जा रही हैं। एक तरफ प्रशासन द्वारा अंसारी फैमिली के होटल को बंद करा दिया गया वहीं दूसरी तरफ मुख्तार अंसारी के बेहद करीबी रहे गोरा राय की संपत्ति कुर्ग कर दी गई। इसी क्रम में पुलिस प्रशासन ने तीसरी कार्रवाई करते हुए मुख्तार अंसारी की पत्नी आफसा अंसारी के खिलाफ धारा 82 की कार्रवाई करते हुए उनके घर पर नोटिस चस्पा किया। पुलिस अधिकारियों के साथ मौजूद भारी पुलिस फोर्स ने डुगडुगी बजाते हुए शहर कोतवाली क्षेत्र के सैयदवाड़ा स्थित आफसा अंसारी के मकान और मोहम्मदाबाद क्षेत्र स्थित मुख्तार अंसारी के घर पर नोटिस चस्पा

किया। मालूम हो कि थाना कोतवाली गाजीपुर में धारा 406/ 420/ 386/ 506 भारतीय दंड विधान में दर्ज मुकदमे में फरार, वांछित चल रहे 50 हजार के इनामियां आफसा अंसारी पत्नी मुख्तार अंसारी के घर पर न्यायालय मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी द्वारा जारी आदेश अंतर्गत धारा 82 की कार्यवाही की गई। इस मामले में पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह ने बताया कि मुकदमे में वांछित आफसा अंसारी काफी लंबे समय से फरार चल रही है।ऐसे में न्यायालय के आदेश पर धारा 82 की कार्रवाई की गई। इस कार्रवाई के दौरान क्षेत्राधिकार नगर गौरव कुमार, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली तेज बहादुर सिंह समेत भारी पुलिस फोर्स मौजूद रही।

पी0 जी0 कालेज में प्रवेश परीक्षायें 12 जुलाई से 25 जुलाई तक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर की प्रवेश परीक्षाएं आगामी 12 जुलाई 23 से 25 जुलाई 23 के बीच आयोजित की गई है। मालूम हो कि पी. जी. कालेज ने अपने यहां स्नातक और परास्नातक के प्रवेश फार्म ऑनलाइन भरने की अंतिम तिथि पहले ही 30 जून 23 से बढ़ा कर 10 जुलाई 23 कर दी गयी है। प्राचार्य प्रोफेसर डॉ० राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय ने इस सम्बन्ध में बताया कि छात्रों एवं अभिभावकों की मांग पर प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की तिथि बढ़ाई गई है। अब इसी क्रम में प्रवेश परीक्षा की नयी समय-सारिणी जारी कर दी गयी है। स्नातक और स्नातकोत्तर के सभी विषयों के प्रवेश परीक्षा का आयोजन 12 जुलाई 23 से 25 जुलाई 23 के बीच सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे के बीच संचालित की जाएंगी। प्रवेश परीक्षा

का विस्तृत कार्यक्रम महाविद्यालय की वेबसाइट पर लोड कर दिया गया है। प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाले अभ्यर्थियों का प्रवेश पत्र महाविद्यालय के वेबसाइट पर परीक्षा तिथि से एक दिन पहले लोड किया जायेगा जिसे डाउनलोड करने के पश्चात प्रवेश पत्र की छायाप्रति लेकर परीक्षार्थी प्रवेश परीक्षा में शामिल होंगे।

प्राचार्य प्रोफेसर पाण्डेय ने बताया कि प्रवेश परीक्षा का परिणाम प्रवेश परीक्षा के क्रम में वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाएगा और उसी क्रम में आनलाइन काउंसलिंग के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया शीघ्रता से पूरी की जाएगी। प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी परामर्श दी जाती है कि महाविद्यालय की सूचना से अपडेट रहने के लिए वेबसाइट आवश्यकता अनुसार सर्च करते रहें।

एंटी रोमियो स्क्वाड ने चलाया चेकिंग तथा जागरूकता अभियान

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गाजीपुर पुलिस द्वारा महिला सशक्तिकरण और जागरूकता अभियान मिशन शक्ति अभियान के तहत चलाया जा रहा है। समस्त थानों की महिला पुलिस कर्मियों वह एंटी रोमियो टीम द्वारा मंदिरों, बाजारो, स्कूलों,कॉलेजों व प्रमुख मार्गो आदि पर चेकिंग की जा रही है। अभियान के तहत महिला शक्ति के दृष्टिगत महिलाओं और बालिकाओं को जागरूक किया जा रहा है। तथा साथ ही बेवजह घूमने वाले शोहदों व मनचलों को कड़ी चेतावनी भी दी जा रही है। मिशन शक्ति अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में महिलाओं बालिकाओं की सुरक्षा हेतु जनपद में गठित एंटी रोमियो स्क्वायड द्वारा प्रतिदिन गस्त की जा रही है तथा बालिकाओं महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा के संबंध में जागरूक करते हुए चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। जागरूकता के दौरान उपस्थित महिलाओं, बालिकाओं और छात्राओं को यूपी पुलिस द्वारा चलाये जा रहे सुरक्षा संबंधित सेवाएं वूमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एंबुलेंस सेवा 108 और अपने अपने सियूजी नंबरों के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया गया।

वन महोत्सव सप्ताह- पौधरोपण कर किया गया जागरूक

प्रखर गंभीरपुर/आजमगढ़। वन महोत्सव सप्ताह के तहत विकासखंड मोहम्मदपुर के अमृत सरोवर जलाशय माँ अगवानी मंदिर रानीपुर रजमो व पारस कन्या इंटर कॉलेज रानीपुर रजमो मे ब्लॉक प्रमुख विजय विश्वकर्मा द्वारा शुक्रवार को पौधरोपण कर जागरूक किया जाता है।इस मौके पर संघ के प्रान्त प्रचारक सुभाष जी, डी एफ ओ गंगादत्त मिश्रा, वन विभाग के दरोगा गुलाब यादव, मुन्ना सिंह समेत प्राथमिक विद्यालय रानीपुर रजमो के अध्यापक व छात्र, छात्रा उपस्थित थे। ब्लॉक प्रमुख विजय विश्वकर्मा ने जागरूक करते हुए कहे की यह हमें देते ही हैं हमसे कुछ लेते नहीं हैं इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हमे अपने जन्मदिवस पर, सालगिरह पर शादी एवं अन्य शुभ अवसर पर कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाएं उसके बाद जैसे एक छोटे बच्चे को पाल पोस कर बड़ा किया जाता है उसी प्रकार से उसकी देखरेख करके उसे बड़ा होने दें।

गढ़वा घाट आश्रम गंगा जी के किनारे बृहद रूप में किया गया पौधरोपण

प्रखर वाराणसी। पर्यावरणविद अनिल सिंह ने पर्यावरण, जल व वन संरक्षण, स्वच्छता का दिलाया शपथ, वन महोत्सव के उपलक्ष में गढ़वा घाट आश्रम में मलिकार बाबा के मार्गदर्शन में वन महोत्सव मनाया गया।जिसके दौरान गंगा हरीतिमा अभियान के ब्रांड अम्बेसडर, सृजन सामाजिक विकास न्यास के अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह के मिशन एक करोड़ पौध रोपण के तहत शुक्रवार को गढ़वा घाट आश्रम में श्री अनिल कुमार बृक्ष कमांडेंट के देख रेख में 95 बटालियन सीआरपीएफ एवं गढ़वा घाट छोटे मालिकार बाबा साधु संतों की टीम पूरी टीम के साथ वृहद पौध रोपण एवं स्वच्छता अभियान के तहत जन जागरुकता रैली निकाली गयी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजीव कुमार सिंह जिला वन अधिकारी वाराणसी, विशिष्ट अतिथि उप कमांडेंट उमाकांत ओझा 95 बटालियन सीआरपीएफ एवं डाक्टर भगवान राय आर एस ओ थे। मदन राम चौरसिया, 95 बटालियन सीआरपीएफ, सृजन सामाजिक विकास न्यास के सदस्य, आश्रम के साधु-संतों ने अपना सक्रिय योगदान दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत आश्रम में उपस्थित 95 बटालियन के जवान वन विभाग के कर्मचारी एवं साधु संतों को स्वच्छता, जल संरक्षण एवं वन संरक्षण की शपथ समाजसेवी पर्यावरणविद अनिल कुमार सिंह ने दिलायी । गढ़वा घाट आश्रम गंगा जी के किनारे लगभग 351 पौधों का रोपण किया गया एवं उसे सुरक्षित रखने की भी जिम्मेदारी ली गई ।कार्यक्रम में 95 बटालियन के टीम के साथ प्रवीण सिंह तथा आश्रम के तमाम साधु संत वन विभाग की टीम सृजन समाजिक न्यास विकास के सदस्य आदि लोग उपस्थित रहे।

मैं रहूं ना रहूं मेरा देश रहना चाहिए : सुभास

प्रखर गंभीरपुर /आजमगढ़। धर्म की जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सद्भावना हो विश्व का कल्याण हो के नारे के साथ गुज

उठा गुरु दक्षिणा का कार्यक्रम विकासखंड महेशपुर के बिंद्रा बाजार में गुरु दक्षिणा कार्यक्रम का आयोजन पारस करनेका आयोजन पारस करना डिग्री कॉलेज बिंद्रा बाजार में किया गया कार्यक्रम के आयोजक पूर्व राज्य मंत्री भाजपा नेता डॉक्टर, कृष्ण मुरारी विश्वकर्मा रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में प्रांत प्रचारक गोरक्ष प्रांत सुभाष अपने संबोधन में कहा गया कि हिंदुस्तान का कल्याण केवल हिंदू ही कर सकता है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा देश के हित कल्याण और विकास के लिए काम करता है भगवा ध्वज भगवान का ध्वज हैहिट कल्याण और विकास के लिए काम करता है भगवा ध्वज भगवान का ध्वज है जो सबका गुरु है जो भगवान के मंदिर से लेकर हर जगह स्थापित है संघ रायपुर का खेड़ा कार्यक्रम आपसी भाईचारा को जोड़ने और हिंदू होने पर गर्व के लिए यह कार्यक्रम साल में एक बार चला जाता है गुरु दक्षिणा का कार्यक्रम सदियों से चला आ रहौ कौन बताया कि ज्ञानी गुरुओं ने कहा है कि धर्म की जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सद्भावना हो विश्व का कल्याण हो धर्म की जय तब होती हैधर्म की जय तक होती है जब जाति छुआछूत पूरी तरह खत्म हो और सभी लोग एक संगठन के रूप में रहते हैं तो वहां धर्म की जय होती है और जब हम अपने सभी लोगों के लिए सद्भावना का व्यवहार प्रेम रखते हैं, नारियों का सम्मान भाई भाई का प्यार वृद्धा विधवा आश्रम बने हो वहां अधर्म पैदा होता है वहां अधर्म का नाश होता है, जब तक हमारे बीच एक दूसरो के लिए सदभावना न हो तब तक बिश्व का कल्याण नही हो सकता ,अगर हम हिन्दु होने पर गर्व करेंगे तो भारत मे135 करोंण लोगो का एक संगठन होगा।

वाराणसी में उफान पर गंगा, कई मंदिर डूबे

प्रखर वाराणसी। पहाड़ों और मैदानी इलाकों में बारिश की वजह से गंगा का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। बनारस में बुधवार को गंगा का जलस्तर 60.20 मीटर रिकॉर्ड किया गया। अब गंगा शीतला घाट के आरती स्थल पहुंच गईं हैं। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार, 40 मिलीमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से जलस्तर बढ़ रहा है। बढ़ते जलस्तर ने नाविकों और घाट किनारे रहने वालों की चिंता बढ़ा दी है। सात दिनों के अंदर ही 1.68 मीटर जलस्तर बढ़ा है। इसका असर प्रयागराज, मिजार्पुर, गाजीपुर और बलिया में भी देखने को मिला है। नाविकों का कहना है कि यही स्थिति रही तो बाढ़ की नौबत आएगी। घाटों पर कांवरियों और श्रद्धालुओं को दिक्कत होगी। अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ेगी। जल पुलिस भी जागरूकता अभियान चला रही है। मंगलवार को गंगा का जलस्तर 59.57 मीटर था, जो अब बढ़ गया है।

संक्षिप्त खबरें

खंड विकास अधिकारी ने सौंपी आवास की चाभी लाभार्थियों के चेहरे पर दिखी मुस्कान

प्रखर जखनिया गाजीपुर। प्रधानमंत्री आवास के आधा दर्जन लाभार्थी अपनी पात्रता के आधार पर खंड विकास अधिकारी जखनिया त्रिवेणी राम के हाथ से आवास की चाभी प्राप्त कर खुशियों से झूम उठे। लाभार्थियों ने खुशी का इजहार करते हुए सरकार का धन्यवाद किया। खंड विकास अधिकारी ने त्रिवेणी राम ने बताया कि शासन प्रशासन द्वारा गांव में आवास विहीन लोगो को चयनित कर प्रधानमंत्री आवास तथा मुख्यमंत्री आवास प्रदान किया जा रहा है ।ऐसे पात्र धारक लोग जो सरकार द्वारा प्रदत्त आवास से वंचित रह गए हैं उन्हें भी जल्द ही जांच कर आवास दिया जाएगा। खंड विकास अधिकारी ने गांव में हो रहे विकास कार्यों के बारे में लाभार्थियों से जानकारी भी हासिल की और बताया कि अगर गांव में किसी प्रकार की कोई समस्या आती है तो वह अपने ग्राम प्रधान के साथ सचिव से मिलें। समस्या का निराकरण नहीं होने पर किसी भी समय मेरे कार्यालय में आकर मुझसे मिला जा सकता है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ग्राम प्रधान अभय सिंह, सिकानू राम, उमाशंकर यादव,हरिकेश यादव, लक्ष्मण सिंह,संतोष यादव, सुभाग्गा यादव सहित सचिव अंजनी सोनकर,फैजअहमद, रामजन्म सिंह, राजकमल,धर्मेंद्र कुमार सहित दर्जनों लाभार्थी एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के वाराणसी आगमन के उपलक्ष में मां मनसा देवी मंदिर के पास स्वच्छता अभियान चलाया गया

प्रखर रामनगर वाराणसी। वाराणसी के सांसद और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी के वाराणसी आगमन के उपलक्ष में महानगर के रामनगर वार्ड नम्बर 65 में मां मनसा देवी मंदिर के पास स्वच्छता अभियान चलाया गया।स्वच्छ भारत अभियान के सह प्रभारी राजकुमार सिंह के नेतृत्व मेंउ भाजपा के तमाम कार्यकताओं ने भाग लिया। इसमें भाजपा के तमाम कार्यकताओं ने स्वच्छ भारत सुंदर भारत के संकल्पना को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। प्रमुख रूप से शामिल महानगर मंत्री डॉ अनुपम गुप्ता, अशोक जायसवाल, जितेंद्र पांडे, लल्लन सोनकर, मनोज यादव, राजकुमार सिंह, रितेश पाल ,प्रीति सिंह, विनीत राय, राम साहनी,अंकित राय,गुलाब बिन्द, दुर्गा साहनी, अश्विन मिश्रा, देवेंद्र सिंह, भैयालाल सोनकर,जय किशन जायसवाल, संत राम मौर्या, रमेश पटेल, मयूर शर्मा, राजकुमार पटेल,राकेश मौर्या, विक्की बघेल, शुभम सिंह, इत्यादि।

कोणार्क कंपनी ने साठ हजार पौधे लगाने का अभियान शुरू किया

प्रखर थानागद्दी जौनपुर। चंदवक थाना क्षेत्र के बरामनपुर स्थित कोणार्क सीमेंट शीट बनाने वाली यू ए एल कंपनी ने पर्यावरण विभाग जौनपुर के निर्देशन में आज शुक्रवार से पौधरोपण कार्यक्रम का अभियान शुरू किया।कंपनी के कार्यकारी निदेशक केएनपी सिन्हा और और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत कार्यवाह मुरली पाल ने कंपनी परिसर में वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर कंपनी के जनरल मैनेजर विष्णु पांडेय ने कहा कि प्रदूषण के विनाश और पर्यावरण के संतुलन के लिए वृक्षारोपण अनिवार्य है।शासन की मंशा के अनुरूप क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर कुल 60 हजार पौधे लगाने की योजना है।आज शुक्रवार से आगामी 10 दिनो तक वृक्षारोपण का कार्य चलेगा। इस मौके पर मुख्य रूप से पर्सनल मेनेजर डी एन उपाध्याय उपेंद्र यादव ए वी सिंह धनंजय मिश्र संतोष झा मुरारी पांडेय और बी पी सिंह सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं